मुद्रावाणी

अंक 10

भारत सरकार टकसाल, नोएडा

(सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई)

डी-2, सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)



सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन

भारत सरकार टकसाल नोएडा में स्थापित 493 केडबल्यूडीसी / 445 केडबल्यूएसी के सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन दिनांक 16.01.2026 को श्री विजय रंजन सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एसपीएमसीआईएल के कर कमलों से, विशिष्ट अतिथिगण श्री सुनील कुमार सिन्हा, निदेशक (मा.सं.), एसपीएमसीआईएल, श्री टी नागराजन, निदेशक (वित्त), एसपीएमसीआईएल, श्रीमती रेणु नारंग, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एनवीवीएन की गरिमामयी उपस्थिति तथा श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भारत सरकार टकसाल, नोएडा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।









अनुक्रमणिका

राजभाषा पत्रिका

संरक्षक:

श्री दुर्गेश पति तिवारी
मुख्य महाप्रबंधक

उप संरक्षक:

श्री रविन्दर सिंह
अपर महाप्रबंधक
(तक.प्रचा.)

प्रकाशन समिति

श्रीमती अनिला अग्रवाल,
संयुक्त महाप्रबंधक
(वित्त एवं लेखा)

श्री प्रकाश कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

सुश्री रेणु भसीन
संयुक्त महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

क्र.सं.	पाठ	पृष्ठ सं.
1	संदेश	4–6
2	संरक्षक की कलम से	7
3	संपादकीय	8
4	ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ (जीएलओएफ़) के खतरे एवं आपदा न्यूनीकरण के उपाय	09–10
5	बहु कौशल विकास एवं इसके लाभ	11
6	भक्ति में ष्शक्ति	12
7	स्वतंत्रता दिवस	13
8	आइये हिन्दी को जानें	14
9	बस एक बार	14
10	और अधिक की चाह छोड़ें, जो आपके पास है उसे देखना शुरू करें...	15–16
11	विदेशी मूल के हिंदी सेवी	16
12	समय प्रबंधन और सफलता सूत्र	17
13	मेरी कहानी – मुश्किलों से मंजिल तक	18
14	मेरी ऊटी यात्रा	19, 20
15	मेरी भाषा के लोग	21
16	कृत्रिम मेधा: 21वीं सदी का वरदान या अभिशाप?	22
17	जीवन	23
18	भारत सरकार टकसाल केकर्मयोगियों की कहानी	24
19	प्रश्नपत्र से परिणाम तक परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता की आवश्यकता	25–26
20	संकल्प का नया सवेरा	27
21	गांधीजी का पत्रकार रूप	28–29
22	बेटियां बेटियां:ऐसी होती हैं बेटियां	30
23	छोटे सुधार, बड़ा परिवर्तन	31
24	रजिस्ट्री का सबसे बड़ा भ्रम	32
25	विदेशी मूल के हिंदी सेवी	32
26	महत्वपूर्ण द्विभाषी वाक्यांश	33
27	जिम्मेदारी	34
28	गतिविधियां	36–42

संपादक : श्री हीरामणि सुयाल, उप प्रबंधक (रा.भा.)
संकलन : आशीष शर्मा, कनि. हिन्दी अनुवादक
डिजाइन एवं प्रिंट : वंदिता जैन (दिव्य एडवर्टाइजर्स)

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।
रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे"

विजय रंजन सिंह
VIJAY RANJAN SINGH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.



संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा अपनी गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" का 10वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। ऐसे दायित्व का निर्वहन निरंतर करते रहना राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और दायित्वबोध का परिचायक है।

हिन्दी प्रशासन की भाषा मात्र न होकर सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय एकता तथा जनसम्पर्क का एक माध्यम भी है जो वर्तमान में वैश्विक पहचान बनाने की ओर अग्रसर है। हिंदी के माध्यम से वैश्विक कुटुंब का परिचय हमारी संस्कृति, मूल्यों और संस्कारों से हो रहा है। कार्यालयों में हिंदी डिजिटल युग के नए परिवेश के अनुकूल विकसनशील भी है जिसके परिणामस्वरूप हिंदी का सरल स्वरूप निरंतर लोकप्रिय हो रहा है।

राजभाषा के उत्कृष्ट निष्पादन हेतु इकाई को वर्ष 2024-25 के लिए उत्तर-2 क्षेत्र में 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है इसके लिए आप सभी को हार्दिक बधाई। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भविष्य में भी आप लोग ऐसे ही प्रगतिमान रहेंगे। साथ ही, इकाई द्वारा दिसंबर 2025 में माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति के कोलकाता दौरे के निमित्त दिल्ली में विभिन्न व्यवस्थाएँ सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने हेतु किए गए प्रयास भी प्रशंसनीय हैं।

"मुद्रावाणी" का यह अंक मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ राजभाषा के कामकाज एवं इसकी प्रगति के सिंहावलोकन का अवसर भी उपलब्ध कराएगा। मैं गृह पत्रिका के प्रकाशन के लिए इकाई प्रबंधन, संपादक मण्डल, तथा रचनाकारों को गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

(विजय रंजन सिंह)

सुनील कुमार सिन्हा
SUNIL KUMAR SINHA
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.



संदेश

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के दसवें अंक के प्रकाशन के अवसर पर अत्यंत हर्ष हो रहा है। पत्रिका के नवीन अंक के माध्यम से आपसे संवाद करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

आज हिंदी साहित्य की भाषा की सीमाओं से आगे बढ़कर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वाणिज्य की भाषा भी बन चुकी है। वर्तमान डिजिटल युग में कंप्यूटर, मोबाइल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर हिंदी का प्रयोग बेहद सरल और सुलभ हो गया है जिससे अधिकाधिक लोगों को हिन्दी से जुड़ने का अवसर मिल रहा है। विभिन्न प्रकार के राजभाषा ई-टूल विकसित होने से हिन्दी में काम करने में सहूलियत हो रही है जिससे विभिन्न भाषा-भाषी लोग भी हिन्दी को सहजता से स्वीकार कर रहे हैं।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा को वर्ष 2024-25 में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए उत्तरी-2 क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने पर इकाई के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों बधाई। आशा है नई ऊर्जा के साथ राजभाषा का उत्कृष्ट कार्य आगे भी जारी रहेगा।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका "मुद्रावाणी" हिन्दी के सरल, सुबोध और सुग्राह्य स्वरूप को अपनाते हुए अपनी प्रगति यात्रा को आगे बढ़ा रही है। साहित्य सृजन और आत्मचिंतन के इस अवसर का लाभ उठाएँ। मेरा विश्वास है कि "मुद्रावाणी" के इस अंक का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन एवं प्रचार में सहयोग देगा। गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(सुनील कुमार सिन्हा)

टी.नागराजन
T. NAGRAJAN
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.



संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के दसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और राष्ट्रीय चेतना की संवाहक भी होती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हिन्दी को राजभाषा का गौरव प्राप्त है जो केवल संवैधानिक व्यवस्था नहीं, बल्कि देश के विविध भाषाई समुदायों के बीच संवाद और समन्वय का प्रभावी माध्यम भी है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपनाई जा रही प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति के माध्यम से हिंदीतर क्षेत्रों के लोग भी हिन्दी को अपना रहे हैं और अपने कार्यालय में राजभाषा की सहायक सामग्री, ई-टूल्स, मानक शब्दकोश की मदद से हिन्दी में काम कर रहे हैं।

गृह पत्रिका कर्मचारियों की भावात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी की ध्वजवाहिका और सामाजिक ताने-बाने के संतुलन का आधार भी होती है। कर्मचारियों को चाहिए कि वे भावाभिव्यक्ति हेतु उपलब्ध कराये गए इस मंच का का लाभ उठाएँ और अपने लेखन कौशल का संवर्धन और परिष्करण भी करते रहें।

पत्रिका के इस अभिनव अंक की सफलता की कामना करते हुए मैं संपादक मण्डल सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

टी. नागराजन
(टी.नागराजन)

दुर्गेश पति तिवारी
DURGESH PATI TIWARI
मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager
भारत सरकार टकसाल, नोएडा
India Government Mint, Noida
सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की इकाई
A unit of Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.
डी-2, सेक्टर-1, नोएडा/D-2, Sector-1, Noida-201301



संरक्षक की कलम से

यह हम सभी के लिए गौरव और हर्ष का विषय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा अपनी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के दसवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इसके लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई।

भारत जैसे सांस्कृतिक और भाषायी विविधताओं वाले देश में लोगों को जोड़ने में हिन्दी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के संविधान निर्माताओं ने देश की सभ्यता और संस्कृति तथा तत्कालीन आवश्यकताओं को देखते हुए हिन्दी को 14 सितंबर 1949 को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जिसके प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन की अपेक्षा हम सब से की जाती है। कर्मचारियों को चाहिए कि वे व्यक्तिगत प्रयासों से राजभाषा हिन्दी को अपनाते हुए इसे कार्यालयीन कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में योगदान दें। ऐसे प्रयासों से निश्चित ही राजभाषा की प्रगति सुनिश्चित होगी।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है, परिणामस्वरूप इकाई को कई मंचों पर पुरस्कारों से विभूषित किया गया है। वर्ष 2024-25 के लिए भी इकाई को उत्तर-2 क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए "द्वितीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है, आप सभी को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई। मेरी अपेक्षा है कि ऐसा श्रेष्ठ प्रदर्शन आगे भी इसी ऊर्जा के साथ जारी रहे।

गृह पत्रिका का यह अंक अनूठे विचारों, कहानियों और गतिविधियों का अनुपम संगम है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ साहित्यिक सृजन की इस परंपरा के निर्वहन को निरंतर जारी रखने के लिए मैं राजभाषा अनुभाग तथा गृह पत्रिका के संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ। गृह पत्रिका में विविध विधाओं से सम्पन्न साहित्य उपलब्ध करवाने वाले रचनाकारों को भी कोटि प्रशंसा। मुझे विश्वास है कि "मुद्रावाणी" में समाहित साहित्य राजभाषा को दिशा देने और इसके प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाएगा।

(दुर्गेश पति तिवारी)

संपादकीय



प्रिय पाठकगण,

सप्रेम नमस्कार।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारी गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' का यह नवीनतम 10वां अंक आपके हाथों में है जो हमारी साझा सफलताओं और टीम वर्क का जीवंत दस्तावेज़ है।

हमारा उद्देश्य हमेशा एक ऐसे मंच का निर्माण करना रहा है जहाँ उत्कृष्ट साहित्य के द्वारा राजभाषा हिन्दी की उपलब्धियों को स्थान मिले और इसकी प्रगति को दिशा देने का प्रयास हो सके। हमारी टीम ने दिन रात मेहनत करके ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और सूचनात्मक सामग्री आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है जो निश्चित रूप से आपका ज्ञानवर्धन और मनोरंजन करने के साथ राजभाषा हिन्दी के प्रति आपके दृष्टिकोण को एक नई दिशा भी देगा।

मैं एसपीएमसीआईएल के उच्च प्रबंधन के प्रति आदर और कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ कि उनका आशीर्वाद हमें संदेशों के रूप में प्राप्त हुआ। साथ ही, मैं मुद्रावाणी के इस अंक को तैयार करने में योगदान देने वाले प्रत्येक लेखक, संकलनकर्ता, डिज़ाइनर और अपने सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। वस्तुतः उनके सहयोग के बिना यह पत्रिका इस रूप में आपके सामने न आ पाती।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक भी पिछले अंकों की तरह आपके हृदय में एक विशेष जगह बनाएगा और आप इसमें समाहित साहित्य से राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना योगदान देंगे। आपकी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं। कृपया अपने विचार हमसे साझा करें ताकि हम भविष्य में और बेहतर प्रस्तुतियाँ ला सकें। आप सभी को सुखद पठन की शुभकामनाएँ!

हीरा मणि सुयाल
उप प्रबन्धक (राभा)

ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ (जीएलओएफ़) के ख़तरे एवं आपदा न्यूनीकरण के उपाय



रविन्दर सिंह
अपर महाप्रबंधक (तक.प्रचा.)

जीएलओएफ़ अर्थात ग्लेशियल झील विस्फोट बाढ़ का संबंध मुख्य रूप से अचानक आने वाली बाढ़ जैसी विनाशकारी प्राकृतिक आपदा से है जो कि वर्तमान दशक में आम हो चुकी हैं। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदा हिमालयी क्षेत्र में अक्सर देखी जा रही है।

हिमनदी अर्थात ग्लेशियर से ढके ऊंचे इलाकों में हिमनदी झीलें आम हैं। ये झीलें तब बनती हैं जब ग्लेशियर की बर्फ, मोरेन या प्राकृतिक गड्ढे पानी को रोक लेते हैं। ऐसी झीलें कई प्रकार की होती हैं, जिनमें ग्लेशियर की सतह पर पिघले पानी के तालाबों से लेकर मुख्य घाटी में ग्लेशियर द्वारा प्राकृतिक रूप से बनाए गए बांधों में उप-घाटियों में स्थित बड़ी झीलें शामिल हैं। ये झीलें आमतौर पर पीछे हटते ग्लेशियर के सामने रिसाव के माध्यम से अपना पानी बहा देती हैं। मोरेन स्थलाकृतिक गड्ढे बनाता है जिसमें आमतौर पर पिघला पानी जमा हो जाता है, जिससे ग्लेशियर झील का निर्माण होता है। जब यह झील जलरोधक हो जाती है, तो पिघला पानी तब तक बेसिन में जमा होता रहता है जब तक कि रिसाव या अतिप्रवाह झील के जल स्तर को सीमित न कर दे।

मोरेन बांधों से बनी ऐसी झीलें ग्लेशियर झीलों का सबसे आम प्रकार प्रतीत होती हैं। पिघले हुए पानी का जमाव कभी-कभी अस्थिर हो सकता है, जिससे अचानक बड़ी मात्रा में संचित जल बह जाता है। इन बर्फ या मोरेन बांधों के टूटने से होने वाली विनाशकारी घटनाओं को विश्व भर में दर्ज किया गया है। ग्लेशियर झीलों के फटने से उत्पन्न होने वाली अचानक बाढ़, जिसे ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ (जीएलओएफ़) कहा जाता है, हिमालय में प्रसिद्ध है, जहां ऐसी झीलें अक्सर भूस्खलन से बनती हैं। ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ में निचले इलाकों में बाढ़ लाने की अपार क्षमता होती है, जिससे तीव्र गति से लाखों गैलन पानी निकलने के कारण विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। अक्सर, ऐसी स्थितियों से उत्पन्न होने वाले परिणाम अत्यधिक अप्रत्याशित होते हैं, मुख्य रूप से वर्षा की तीव्रता, भूस्खलन के स्थान, संचित जल की मात्रा और क्षेत्रफल तथा झीलों/जल निकायों की भौतिक स्थितियों के बारे में पर्याप्त डेटा की अनुपलब्धता के कारण। इसलिए, हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर झीलों और जल निकायों की बारीकी से निगरानी करना आवश्यक है। यह आपदा अचानक घटित होती है और इसके पीछे भूवैज्ञानिकों द्वारा कई कारण बताए गए हैं:

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक तापमान बढ़ने से हिमालय में स्थित ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे इन ग्लेशियर झीलों में पानी का दबाव बहुत बढ़ जाता है और वे टूट जाती हैं।

भूस्खलन और हिमस्खलन: अचानक किसी बड़ी चट्टान या बर्फ के पहाड़ का टूटकर झील में गिरना, जिससे बांध टूट जाता है।

भूकंप: हिमालय जैसे भूकंप संवेदी क्षेत्रों में हल्के झटके भी इन कमजोर प्राकृतिक बांधों को तोड़ देते हैं।

बादल फटना या भारी बारिश: अत्यधिक बारिश के कारण झील का जलस्तर अचानक क्षमता से अधिक हो जाता है।

भारत का हिमालयी क्षेत्र इस आपदा के प्रति बेहद संवेदनशील है। भारत में ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ के प्रमुख उदाहरण निम्न हैं:

केदारनाथ आपदा (2013): उत्तराखंड में चोराबाड़ी झील के फटने ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ के कारण मंदाकिनी नदी में भीषण बाढ़ आई थी, जिसने भारी तबाही मचाई।

चमोली, उत्तराखंड (2021): चमोली जिले में चमोली जिले में नंदा देवी ग्लेशियर के एक हिस्से के टूटने और रॉक-आइस एवलांच (बर्फ और चट्टान का गिरना) के कारण धौलीगंगा और अलकनंदा नदियों में अचानक फ्लैश फ्लड आया, जिसमें दो हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट्स को भारी नुकसान हुआ।

सिक्किम आपदा (2023): सिक्किम की 'साउथ लोनाक झील' के फटने से तीस्ता नदी में अचानक भयानक बाढ़ आ गई थी और तीस्ता-III बांध बह गया था।

भारत के अलावा पड़ोसी हिमालयी देशों में भी इस प्रकार की आपदाएँ आई हैं:

दिग त्शो, नेपाल (1985): नेपाल की दिग त्सो झील में हिमस्खलन के कारण ग्लेशियर का एक बड़ा हिस्सा गिरने से झील का बांध टूट गया था, जिससे नमचे हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट पूरी तरह नष्ट हो गया था।

थियानबो झील, नेपाल (2024): पूर्वी नेपाल के एवरेस्ट क्षेत्र में स्थित थ्यानबो लेक के फटने से थामे गांव में भारी नुकसान हुआ।

नेपाल और तिब्बत सीमा (2026): अगस्त 2026 में तिब्बत-नेपाल बॉर्डर के पास एक सुप्रा-ग्लेशियल झील टूटने (प्युरोग्लेशियर के पास) से भयंकर तबाही हुई, जिससे भोटे कोशी और त्रिशूली नदी में बाढ़ आ गई और इसका अलर्ट भारत के बिहार (गंडक नदी) तक जारी किया गया।

ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ के विनाशकारी प्रभाव

ग्लेशियर झील विस्फोट बाढ़ को सबसे खतरनाक प्राकृतिक आपदाओं में से एक माना जाता है क्योंकि चेतावनी का समय सीमित होने के कारण पहाड़ों की अत्यधिक ऊंचाई पर होने के कारण निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को संभलने का बहुत कम समय मिलता है परिणाम स्वरूप इन इलाकों में बाढ़ भयानक तबाही लेकर आती है।

पानी अपने साथ भारी मात्रा में कीचड़, मलबे, और विशाल चट्टानों को बहाकर लाता है, जिससे रास्ते में आने वाले गांव, घर, पुल और हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं।

आर्थिक व्यवधान: हिमनद विस्फोट (जीएलओएफ) के बाद पर्यटन, परिवहन, उद्योग और स्थानीय व्यवसायों को लंबे समय तक नुकसान उठाना पड़ता है क्योंकि क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचा आर्थिक गतिविधियों को बाधित करता है और पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यटकों की आवाजाही को कम करता है।

पर्यावरणीय गिरावट: ग्लेशियर विस्फोट से आने वाली बाढ़ जंगलों को उखाड़ देती है, नदी पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करती है, नदी के रासायनिक स्वरूप को बदल देती है और गाद जमाव को बढ़ा देती है। बाढ़ जैव विविधता से समृद्ध संरक्षित क्षेत्रों और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील हिमालयी भूभागों के लिए भी खतरा पैदा करती है।

जल संकट: बाढ़ से दूषित पानी पीने के पानी के स्रोतों को नुकसान पहुंचाता है और प्रभावित आबादी के लिए पानी की कमी पैदा करता है। गाद से भरा बाढ़ का पानी भी जल की गुणवत्ता और निचले इलाकों में जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को खराब करता है।

भविष्य के जीएलओएफ़ आपदा के हॉटस्पॉट

आईसीआईएमओडी के अध्ययनों में बताया गया है कि वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण उत्तरी सिक्किम में 203 नई हिमनदी झीलों का निर्माण हुआ है, जो यह संकेत देता है कि भविष्य में ग्लो-लोफ हॉटस्पॉट 2050 तक हिमालय के पश्चिम में फैल सकते हैं।

इसके अलावा, हिमाचल प्रदेश में स्थित गेफांग गाथ झील तीव्र विस्तार, पर्माफ्रॉस्ट के पिघलने और आसपास की अस्थिर स्थलाकृति के कारण अत्यधिक संवेदनशील मानी जाती है, जो भविष्य में अचानक बाढ़ ला सकती है।

जीएलओएफ़ आपदा के न्यूनीकरण के लिए उपाय

इस आपदा के प्रभाव को कम करने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और वैज्ञानिक कई तकनीकों पर काम कर रहे हैं:

अर्ली वार्निंग सिस्टम: झीलों के जलस्तर पर नजर रखने के लिए सेंसर लगाना ताकि समय रहते चेतावनी दी जा सके और निचले इलाकों को खाली कराया जा सके।

पाइपिंग और नियंत्रित जल निकासी: झीलों में पानी का दबाव कम करने के लिए कृत्रिम रूप से धीरे-धीरे पानी बाहर निकालना।

सैटेलाइट निगरानी: इसरो (ISRO) और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियों के माध्यम से ग्लेशियल झीलों के आकार में हो रहे बदलावों की लगातार मैपिंग करना।

इन सबसे ऊपर विश्व स्तर पर प्रकृति में मानवीय हस्तक्षेप को कम करने, पर्यावरण अनुकूल सतत विकास करने की भी आवश्यकता है ताकि ग्लोबल वार्मिंग जैसे मुद्दों को हल किया जा सके जो कहीं न कहीं ऐसी मानव निर्मित आपदाओं के लिए जिम्मेदार है।

बहु कौशल विकास एवं इसके लाभ



प्रकाश कुमार
संयु. महाप्रबंधक (मा.सं.)

वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी और डिजिटल संचार का युग है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शासन, शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य, व्यापार, उद्योग तथा जनसंचार जैसे क्षेत्रों में तकनीक का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे परिवेश में राजभाषा हिंदी का तकनीकी समावेशन समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। हिंदी को केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित न रखकर आधुनिक तकनीकी माध्यमों में प्रभावी रूप से स्थापित करना आवश्यक है, ताकि डिजिटल युग में हिंदी की उपयोगिता और पहुँच दोनों व्यापक हो सकें।

भारत में करोड़ों लोग हिंदी को समझते और विभिन्न स्तरों पर इसका प्रयोग करते हैं। यदि डिजिटल सेवाएँ केवल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध हों, तो समाज का एक बड़ा वर्ग तकनीकी सुविधाओं से पूर्णतः लाभान्वित नहीं हो पाता। अतः तकनीकी क्षेत्र में हिंदी का समावेशन डिजिटल समावेशन तथा सामाजिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

ई-शासन, ऑनलाइन सेवाओं, मोबाइल अनुप्रयोगों, वेबसाइटों और डिजिटल भुगतान प्रणालियों में हिंदी की सुविधा उपलब्ध होने से आम नागरिक सरकारी एवं गैर-सरकारी सेवाओं का अधिक सहजता से उपयोग करता है। इससे भाषा संबंधी बाधाएँ कम होती हैं और प्रशासन अधिक जनोन्मुख बनता है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी का स्वरूप तेजी से विकसित हुआ है। यूनिकोड के व्यापक प्रयोग ने हिंदी में डिजिटल लेखन को सरल और मानकीकृत बनाया है। कंप्यूटर, स्मार्टफोन तथा अन्य डिजिटल उपकरणों पर हिंदी में टाइपिंग, संपादन और सामग्री निर्माण अब पहले की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक है।

वॉयस टाइपिंग, वाक्-पहचान, मशीन अनुवाद, ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा प्राकृतिक भाषा संसाधन जैसी तकनीकों ने हिंदी के प्रयोग की नई संभावनाएँ खोली हैं। आज उपयोगकर्ता हिंदी में बोलकर संदेश लिख सकता है, विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद कर सकता है तथा डिजिटल माध्यमों पर हिंदी सामग्री का निर्माण और प्रसार कर सकता है। यही नहीं हिंदी के संदर्भ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटबॉट, स्वचालित अनुवाद, भाषण से पाठ रूपांतरण, पाठ से भाषण रूपांतरण तथा भाषा विश्लेषण जैसी सुविधाएँ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।

सरकारी कार्यालयों में पत्राचार, टिप्पण, प्रतिवेदन, आदेश, अधिसूचनाएँ तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को तकनीकी साधनों से और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। सरकारी वेबसाइटों और पोर्टलों पर हिंदी में स्पष्ट, सरल तथा अद्यतन जानकारी उपलब्ध कराना नागरिक-केंद्रित प्रशासन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। ऐसे में ऑनलाइन प्रपत्र, दिशा-निर्देश, सेवाएँ और शिकायत निवारण प्रणाली हिंदी में उपलब्ध होने से नागरिकों की भागीदारी और सरकारी सेवाओं तक उनकी पहुँच आसान हो रही है।

तकनीकी समावेशन के मार्ग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। हिंदी में उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता, मानकीकृत पारिभाषिक शब्दावली, विभिन्न सॉफ्टवेयरों में हिंदी के सहज प्रयोग तथा प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास अभी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँचा है।

इसके अतिरिक्त, कई बार अत्यधिक कठिन अथवा अप्रचलित तकनीकी शब्दावली के कारण हिंदी में उपलब्ध सामग्री सामान्य उपयोगकर्ता के लिए जटिल हो जाती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि राजभाषा हिंदी में तकनीकी सामग्री तैयार करते समय सरल, स्पष्ट, सुबोध और प्रचलित शब्दों को प्राथमिकता दी जाए। राजभाषा हिन्दी के सरल, सुगम, सुबोध प्रयोग को आगे बढ़ाया जाए, जिस निज भाषा का सपना साकार हो सके।

भक्ति में शक्ति



रेणु भसीन
सयुंक्त महाप्रबन्धक (मा.सं.)

भक्ति में अपार शक्ति होती है जो मनुष्य के मन, बुद्धि और अहंकार को शुद्ध करके उसे परमात्मा से जोड़ती है। भक्ति का अर्थ है:

पूर्ण समर्पण: जिससे हमारा अहंकार टूटकर आराध्य में विलीन हो जाता है, वही सच्ची भक्ति है।

अंतस की शुद्धि: यह मन के विकारों, दुष्प्रवृत्तियों और कलुषित विचारों का नाश करती है।

आंतरिक बल: भक्ति में ही शक्ति का अनुभव तब होता है जब पुरुषार्थ के बाद भी व्यक्ति को शांति और सफलता न मिले तब आद्याशक्ति उपासना मार्ग दिखाती है।

भक्ति की प्रमुख शक्तियाँ

पापकर्मों से मुक्ति: सच्ची भक्ति मनुष्य के जन्म-जन्म के संचित पापों को काटती है और उसे बुरे कर्मों से बचाती है।

अहंकार का नाश: यह भक्त के भीतर से घमंड और ईर्ष्या को दूर कर दिव्य प्रेम का संचार करती है।

ईश्वर से मिलन: सच्ची और साफ मन से की गयी भक्ति में अद्भुत शक्ति होती है जो परमात्मा को भी अपने भक्त की सुधि लेने पर विवश कर देती है।

मनुष्य के जीवन में कार्य का विशेष महत्त्व है। व्यक्ति अपने जीवन का एक बड़ा भाग कार्यालयी कार्यों में व्यतीत करता है। ऐसे में कार्य के प्रति निष्ठा, ईमानदारी, अनुशासन और सकारात्मक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हो जाते हैं। कार्यालय में भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव, काम का दबाव और प्रतियोगिता बहुत बढ़ गयी है। ऐसे माहौल में मानसिक शांति और आंतरिक ऊर्जा बनाए रखने के लिए भक्ति एक बड़ा सहारा बन सकती है। ऑफिस के संदर्भ में भक्ति का अर्थ केवल पूजा-पाठ या धार्मिक कर्मकांड ही नहीं है बल्कि अपने काम के प्रति पूर्ण समर्पण, ईमानदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण है और यही भावना कार्यालयी कार्य को अधिक प्रभावी और अर्थपूर्ण बना सकती है।

कार्यालय में भक्ति की शक्ति का अर्थ है—अपने कार्य को ईश्वर के प्रति समर्पण की भावना से करना। जब कर्मचारी अपने कार्य को केवल वेतन प्राप्त करने का साधन न मानकर एक जिम्मेदारी और सेवा के रूप में देखता है तो उसके कार्य में ईमानदारी और लगन बढ़ती है। वह अपने दायित्वों को समय पर पूरा करने तथा संस्था के हित में कार्य करने का प्रयास करता है।

भक्ति मनुष्य को एकाग्रता और मानसिक शांति प्रदान करती है। कार्यालय में कार्य का दबाव, समय-सीमा और विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ तनाव उत्पन्न कर सकती हैं। भक्ति और आध्यात्मिक चिंतन व्यक्ति को धैर्यवान बनाते हैं। इससे वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी शांत मन से निर्णय ले सकता है और समस्याओं का समाधान अधिक सकारात्मक ढंग से कर सकता है।

भक्ति का एक महत्वपूर्ण गुण अहंकार का त्याग है। कार्यालय में विभिन्न पदों और जिम्मेदारियों के कारण कभी-कभी मतभेद या अहंकार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यदि व्यक्ति भक्ति के मार्ग को अपनाकर सेवा और समर्पण की भावना रखता है तो वह अपने सहकर्मियों के साथ सहयोग और सम्मान का व्यवहार करता है। इससे कार्यालय का वातावरण सौहार्दपूर्ण और स्वस्थ बनता है।

इसके अतिरिक्त, भक्ति व्यक्ति को ईमानदारी और नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। जब कर्मचारी अपने कार्य को ईश्वर के समक्ष उत्तरदायित्व मानकर करता है, तो वह भ्रष्टाचार, छल-कपट और अनुचित कार्यों से दूर रहने का प्रयास करता है। इससे संस्था में विश्वास और पारदर्शिता बढ़ती है।

अंततः ऑफिस में भक्ति की शक्ति को अपनाकर हरेक कर्मचारी कर्मयोग को अपना सकता है। जब सभी कर्मचारी अपने काम को पूरी ईमानदारी, निस्वार्थ भाव, एकाग्रता और लगन से करते हैं तो वही आपकी भक्ति बन जाती है और कार्यस्थल अधिक शांत, उत्पादक और सकारात्मक बन सकता है।

भक्ति द्वारा शक्ति प्राप्त करके आप एक साधारण कर्मचारी से एक बेहतरीन लीडर बनते हैं।

स्वतंत्रता दिवस



देवेन्द्र सिंह
सुरक्षा अधिकारी

जो शीश चढ़ा निज चले गए.....

स्वातंत्र्य-समर की स्मृतियाँ
लिख करो लेखनी पुण्य हवन।
जो शीश चढ़ा निज चले गये
उनको कृतज्ञ हो लिखो नमन।।

जब नाम लिखो रणधीरों का
तुम अश्रु नयन में भर लेना।
उन वीर प्रसूता जननी को झुक
एक नमन तुम कर देना।
स्मरण रहे! तुमको मसिपथ
वे राष्ट्र यज्ञ की ज्वाला थे।
जिसका उन्माद नहीं घटता
कुछ ऐसी अनुपम हाला थे।
उनके शोणित का तापमान
अरि को पल में पिघलाता था।
उनके पौरूष की ज्वाला में
रिपु कृमि-समान जल जाता था।
मातृ भूमि हित मिटने की
जलती थी जिनमें प्रखर अगन।।

रानी झाँसी का शौर्य लिखो
तात्या टोपे की लिखो कथा।
लिख दो मंगल पाण्डेय का स्वर
कैसे जन्मा विद्रोह यथा।
तू वृद्ध कुँवर का लिख साहस
नाना की लिख दे युद्ध रीति।
बेगम हजरत का मान लिखो
क्या चली फिरंगी कुटिल नीति।
उस दमन चक्र का दर्द लिखो
परतंत्र राष्ट्र की पीर लिखो।

कोल्हू जुतता सावरकर लिख
काले पानी के वीर लिखो।
वह जलियांवाला बाग लिखो
करुणा ने जहाँ किया क्रंदन।।

स्वतंत्रता के लिए रूधिर का
मूल्य माँगते बोस लिखो।
आजादी की अग्नि शिखा के
मन का वह आक्रोश लिखो।
अशफाक उल्ला रोशन बिस्मिल
का काकोरी काण्ड लिखो।
हँस कर प्राण लुटाने का
उनका वीरत्व प्रकाण्ड लिखो।
शेखर की पिस्तौल लिखो
अल्फ्रेड पार्क का रण लिख दो।
अंतिम गोली शीश मारने
वाला भावुक क्षण लिख दो।
लिखो 'शहीदे आजम' का वह
कालजयी बलिदान अमर।
राजगुरू सुखदेव सहित
फांसी पर चढ़ता शेर-बबर।

रावी तट की वह चिता लिखो
बन गयी राख जिसकी चन्दन।।

कितनी बलिदान कथायें हैं
क्या-क्या लिख दोगी क्षुद्र कलम?
श्रद्धा से शीश झुका बस लिख
आँसू से भीगे शब्द-सुमन।।
जो शीश चढ़ा निज चले गये
उनको कृतज्ञ हो लिखो नमन।।

आइये हिन्दी को जानें



सुभाष चंद
फोरमैन

हिन्दी की वर्णमाला, उच्चारण, लिपि और व्याकरण बहुत व्यवस्थित और नियमबद्ध हैं। जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है, जिससे इसमें भ्रम की गुंजाइश नहीं होती। जो ध्वनि मुँह से निकलती है, वही लिपिबद्ध होती है। जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं होता है।

हिन्दी में स्वर वे स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण बिना किसी रुकावट के और बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से होता है। हिन्दी में मूल स्वरों की संख्या 11 है ये हैं - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। अनुस्वार (अं) और विसर्ग (अः) को स्वरों में न गिनकर 'अयोगवाह' (जो बिना योग के ही अर्थ का वहन करें) के रूप में अलग स्थान दिया जाता है, जबकि पारंपरिक व्याकरण में इन्हें 13 स्वरों के साथ गिना जाता था। स्वरों की मुख्य विशेषता है कि इनका उच्चारण पूरी तरह स्वतंत्र होता है। इन्हें बोलने के लिए किसी दूसरे वर्ण की जरूरत नहीं होती। इनके उच्चारण के समय फेफड़ों से निकलने वाली हवा मुख से बिना किसी रुकावट के बाहर आती है तथा व्यंजनों का रूप बदलने और उनका उच्चारण करने के लिए स्वरों की मात्राओं का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी में मूल व्यंजनों की संख्या 33 है। इनमें से 'क' वर्ग के व्यंजन क,ख,ग,घ,ङ कण्ठ्य व्यंजन कहे जाते हैं क्योंकि इनके उच्चारण के समय ध्वनि कंठ से निकलती है। 'च' वर्ग के व्यंजन च, छ, ज, झ, ञ के उच्चारण के समय जिह्वा तालु से लगती हैं अत: इस वर्ग के अक्षर तालव्य व्यंजन कहे जाते हैं। 'ट' वर्ग के व्यंजन ट,ठ,ड, ढ,ण का उच्चारण करते समय जिह्वा मूर्धा से लगती हैं अत: इन्हे मूर्धन्य व्यंजन कहा जाता है। 'त' वर्ग के व्यंजन त,थ,द,ध,न दंतव्य व्यंजन कहे जाते हैं क्योकि इनके उच्चारण करते समय जीभ दांतों से लगती है तथा 'प' वर्ग के व्यंजन प,फ,ब,भ,म का उच्चारण होठों द्वारा होने के कारण ये ओष्ठय व्यंजन कहलाते हैं। इनके अलावा, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन तथा ड़, ढ़ द्विगुण व्यंजन हैं।

एक बार बोलकर तो देखिए इतनी वैज्ञानिक भाषा संसार की अन्य भाषा कोई नही हैं। इस भाषा में एक मात्रा बदलने से सारा अर्थ ही बदल जाता है। उदाहरण के लिए दिन-दिवस, दीन-गरीब या असहाय।

मुझे गर्व है मेरी मातृ भाषा एवं राष्ट्र भाषा हिन्दी हैं।

बस एक बार



मनीष कुमार मिश्रा
डाटा एंट्री आपरेटर

एक बार समुंदर की लहरों से टकराकर तो देखो,
विषम परिस्थितियों में धैर्य का दामन थामकर तो देखो,
आँधियाँ भी अपना रुख मोड़ लेंगी,
एक बार हिम्मत का दिया जलाकर तो देखो ।

छल, कपट, अभिमान का सर झुका कर तो देखो,
अपने अंदर के सोए बच्चे को सहलाकर तो देखो,
बुराई पर अच्छाई की जीत सुनिश्चित होगी,
बस एक बार अपने अंदर इंसानियत जगा कर तो देखो ।

भड़की हुई चिंगारियाँ बुझा कर तो देखो,
अपनों के लिए खुद को हार कर तो देखो,
जो दूसरों के दिलों को जीत ले,
ऐसी शीतल जल की फुहार बनकर तो देखो ।

असफलता भी घुटने टेक देगी,
एक बार परिश्रम का पेड़ लगा कर तो देखो,
हलकी-फुलकी ज़िन्दगी नज़र आएगी,
बस एक बार ख्वाहिशों का बोझ उतार कर तो देखो ।

और अधिक की चाह छोड़ें, जो आपके पास है उसे देखना शुरू करें...



हेमा
उप महाप्रबंधक (वि एवं ले)

जीवन हमेशा योजना के अनुसार नहीं चलता। चुनौतियाँ और संकट बिना चेतावनी के आते हैं। फिर भी, सबसे कठिन दिनों में भी, खुशी हमेशा मौजूद रहती है। आपको बस इसे पहचानना होगा।

खुशी केवल जीवन की बड़ी उपलब्धियों जैसे कोई प्रमोशन, एक नया घर या बेहतरीन छुट्टियां में नहीं मिलती। यह रोज़मर्रा के पलों में बुनी होती है। एक अजनबी की गर्मजोशी भरी मुस्कान, बारिश के बाद सुबह की पहली किरण, ताज़ा पकी हुई रोटी की खुशबू, या दोपहर की भीषण गर्मी के बाद चलने वाली ठंडी हवा। जीवन ऐसी साधारण चीज़ों से भरा हुआ है जिनके लिए कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। तो फिर हम इन पलों को क्यों चूक जाते हैं? क्योंकि हमारा मन शायद ही कभी वर्तमान में रहता है। हम या तो बीते कल की गलतियों को बार-बार याद करते रहते हैं या आने वाले कल की अनिश्चितताओं के बारे में चिंता करते हैं। जब हमारा शरीर वर्तमान में होता है और मन कहीं और, तो जीवन की असली खुशी हमारे हाथ से निकल जाती है।

प्राचीन चीन के एक प्रसिद्ध दार्शनिक लाओत्से ने कहा है :-**"यदि आप उदास हैं, तो आप अतीत में जी रहे हैं। यदि आप चिंतित हैं, तो आप भविष्य में जी रहे हैं। यदि आप शांत हैं, तो आप वर्तमान में जी रहे हैं।"**

मन लगातार इच्छाओं के पीछे भागता रहता है। उसे लगता है कि खुशी किसी बाहरी चीज़ या रिश्ते में है। चंचल और भटका हुआ मन हमेशा एक लक्ष्य से दूसरे लक्ष्य पर कूदता रहता है। आप अपने पसंदीदा भोजन के लिए किसी शानदार रेस्तरां में बैठे हो सकते हैं, लेकिन यदि आपका मन कल की मीटिंग या भविष्य की योजनाओं में व्यस्त है, तो आपको उस भोजन का स्वाद भी नहीं मिलेगा क्योंकि मन वहाँ उपस्थित ही नहीं था।

एक शांत मन प्रकृति की तरह होता है। हालाँकि, अशांत मन हमारे पास मौजूद अनगिनत आशीर्वादों को अनदेखा कर देता है और केवल उसी एक चीज़ पर टिका रहता है जो हमारे पास नहीं है। ऐसा करने से, यह आपको उन अच्छी चीज़ों के प्रति अंधा बना देता है जो आपके पास पहले से हैं। यहाँ तक कि जो आप चाहते थे उसे पा लेने के बाद भी, मन तुरंत अगली इच्छा की ओर बढ़ जाता है। इस तरह, इच्छाओं का यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होता।

यह सोचना एक भ्रम है कि आपकी खुशी भविष्य में किसी उपलब्धि को हासिल करने पर निर्भर करती है। जब आपके पास वह सब कुछ आ जाता है जो आप चाहते हैं, तब भी आपको वह खुशी नहीं मिलती जिसकी आपने उम्मीद की थी। ऐसा इसलिए है क्योंकि मन तुरंत किसी और चीज़ के पीछे भागने लगता है।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा था, "आप जैसे हैं, जहाँ हैं, उसी स्थिति में खुश रहना शुरू करें, तभी आप पूरी दुनिया में खुश रह पाएंगे।" लेकिन याद रखें, इसका मतलब यह नहीं है कि आप आगे बढ़ने की कोशिश करना छोड़ दें; बस आपकी कोशिशों के पीछे का कारण लालच या असंतोष नहीं होना चाहिए।

आप किसी भी समय उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जो आपके पास हैं और उनका आनंद ले सकते हैं। इसका इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि आपके पास कितनी संपत्ति है। जब आप काम करते हैं या दूसरों की मदद करते हैं, तो रचनात्मक बनें। दूसरों की सेवा करने के कई अलग अलग तरीके हो सकते हैं।

ओपेरा विनफ्रे जो कि एक अमरीकी मिडिया हस्ती, टॉक शो होस्ट, अभिनेत्री, निर्माता व लोकोपकारक महिला हैं, ने भी कहा है कि "यदि आप यह देखना शुरू करें कि आपके जीवन में क्या है, तो आपके पास हमेशा अधिक होगा। लेकिन यदि आप केवल यह देखेंगे कि आपके पास क्या नहीं है, तो आपके पास कभी भी पर्याप्त नहीं होगा।"

खुशहाल जीवन जीने का एक और रहस्य यह है कि दूसरों के पास जो है, उससे कभी ईर्ष्या न करें। अपने मित्र की सफलता का जश्न मनाएं। अपने पड़ोसी की शानदार कार की तारीफ करें। किसी सहकर्मी के नए घर को देखकर खुश हों। दूसरों के आनंद में शामिल होना सीखें, मानो वह आपकी ही सफलता हो। ऐसा करने से आप कभी भी असफलता का अनुभव नहीं करेंगे।

एक शांत मन स्वाभाविक रूप से उच्चतर आनंद की तलाश करता है। जब आपके उद्देश्य का दायरा आपके अपने स्वार्थ से ऊपर उठ जाता है, तो इच्छाएं अपना प्रभाव खो देती हैं। तब आप दुनिया का पूरा आनंद ले पाते हैं और जीवन का हर साधारण दिन असाधारण बन जाता है।·
प्रतिदिन की कार्य-योजना पहले से तैयार करें।

- महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें।
- समय-सीमा निर्धारित करके कार्य पूरा करें।
- अनावश्यक बातचीत और समय की बर्बादी से बचें।
- मोबाइल और सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करें।
- पर्याप्त विश्राम और नियमित व्यायाम करें।
- प्रतिदिन अपने कार्यों की समीक्षा करें और अगली योजना बनाएँ।
- नई जानकारी और कौशल सीखने के लिए प्रतिदिन कुछ समय अवश्य निकालें।

इन आदतों को नियमित रूप से अपनाने से समय का सदुपयोग संभव होता है और सफलता की राह आसान बनती है।

समय जीवन का सबसे मूल्यवान उपहार है। इसका सदुपयोग करने वाला व्यक्ति ही अपने सपनों को साकार कर सकता है। समय प्रबंधन केवल एक कौशल नहीं, बल्कि सफल जीवन जीने की कला है। स्पष्ट लक्ष्य, अनुशासन, नियमित परिश्रम, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और समय का उचित नियोजन सफलता के प्रमुख सूत्र हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति समय का सम्मान करे, अपनी प्राथमिकताओं को समझे और प्रत्येक क्षण का रचनात्मक उपयोग करे, तो वह निश्चित रूप से अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि समय को व्यर्थ नहीं गँवाएँगे, बल्कि उसका सर्वोत्तम उपयोग करके स्वयं, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। यही समय प्रबंधन का वास्तविक उद्देश्य और सफलता का सच्चा सूत्र है।

विदेशी मूल के हिंदी सेवी - फादर कामिल बुल्के - (1909-1982)

फादर कामिल बुल्के हिंदी के एक ऐसे समर्पित सेवक रहे, जिसकी मिसाल दी जाती है। उनका जन्म बेल्जियम में हुआ था। अपने युवा दिनों में उन्होंने संन्यासी बनने का फैसला लिया और भारत की तरफ रुख किया। यहां वह रांची में आकर एक स्कूल में पढ़ाने लगे। खुद इंजिनियरिंग के स्टूडेंट रहे कामिल बुल्के भारत की बोली-बानी में ऐसे रमे कि न सिर्फ हिंदी, बल्कि ब्रज, अवधी और संस्कृत भी सीखी। इन भाषाओं को भारतीय विश्वविद्यालयों में सीखने और उनमें मानक डिग्रियां हासिल करने के दरम्यान उन्हें राम नाम की ऐसी लगन लगी कि उन्होंने राम कथा की उत्पत्ति पर सबसे प्रामाणिक शोध किया। वह सेंट जेवियर कॉलेज, रांची में हिंदी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष भी रहे। कामिल बुल्के का दूसरा अहम काम हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश की तैयारी थी, जिसे उन्होंने उम्र भर बहुत जतन से बढ़ाया।

यह उनकी मेहनत और लगन का ही नतीजा था कि उस शब्दकोश में 40 हजार से ज्यादा शब्द आए। कामिल बुल्के की अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं की जानकारी का भी हिंदी को फायदा मिला और वह शब्दकोश इतना प्रामाणिक बन गया कि आज भी किसी शब्द और उसके भेद पर विवाद होने पर लोग कामिल बुल्के की डिक्शनरी की तरफ ही रुख करते हैं। बाद के दिनों में वह चर्च में पुजारी बने और उनके नाम के आगे फादर लगा। भारत जैसे धर्मबहुल देश में उन्होंने बाइबल का हिंदी अनुवाद भी पेश किया। उन्होंने लिखा भी है, 'ईश्वर का धन्यवाद, जिसने मुझे भारत भेजा और भारत के प्रति धन्यवाद, जिसने मुझे इतने प्रेम से अपनाया। 7 अगस्त, 1982 को फादर बुल्के का निधन हो गया। हिंदी सेवा के लिए उन्हें भारत के सवोर्च्च नागरिक सम्मनों में से एक 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

समय प्रबंधन और सफलता सूत्र



नीरज झा
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

मनुष्य के जीवन में समय सबसे अमूल्य संपत्ति है। धन, ज्ञान और अन्य संसाधनों की कमी को समय के साथ पूरा किया जा सकता है, लेकिन एक बार बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। यही कारण है कि समय को जीवन का सबसे बड़ा धन कहा गया है। इतिहास गवाह है कि जिन लोगों ने समय का सदुपयोग किया, उन्होंने अपने जीवन में असाधारण सफलताएँ प्राप्त कीं। इसके विपरीत, जिन्होंने समय का महत्व नहीं समझा, वे अनेक अवसरों से वंचित रह गए। इसलिए समय प्रबंधन और सफलता का संबंध अत्यंत गहरा है। समय का सही नियोजन व्यक्ति को न केवल लक्ष्य तक पहुँचाता है, बल्कि उसके व्यक्तित्व को भी अनुशासित, आत्मविश्वासी और प्रभावशाली बनाता है।

समय प्रबंधन और सफलता का संबंध

समय प्रबंधन सफलता की पहली सीढ़ी है। बिना योजना के किया गया कार्य अधिक समय लेता है और अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाता। जो व्यक्ति अपने कार्यों की सूची बनाता है, प्राथमिकताएँ तय करता है और निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करता है, उसकी सफलता की संभावना अधिक होती है।

समय का सही उपयोग व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव कम करता है तथा कार्य की गुणवत्ता में सुधार लाता है। समय पर कार्य पूरा करने वाला व्यक्ति दूसरों का विश्वास भी जीतता है। यही विश्वास आगे चलकर उसकी सफलता का आधार बनता है।

सफलता के प्रमुख सूत्र

सफलता का पहला सूत्र है स्पष्ट और निश्चित लक्ष्य। बिना लक्ष्य के जीवन दिशा-विहीन हो जाता है। जब व्यक्ति को यह पता होता है कि उसे क्या प्राप्तऊर्जा का उपयोग करता है।

हर कार्य समान महत्व का नहीं होता। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को पहले पूरा करना चाहिए। कम महत्वपूर्ण कार्यों को बाद में किया जा सकता है। प्राथमिकता तय करने से समय की बचत होती है और आवश्यक कार्य समय पर पूरे हो जाते हैं।

अनुशासन: सफलता का मूल आधार है। नियमित दिनचर्या, समय पर उठना, समय पर कार्य प्रारंभ करना तथा निर्धारित समय में कार्य समाप्त करना सफलता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। अनुशासित व्यक्ति अपने समय का अधिक प्रभावी उपयोग करता है।

टालमटोल से बचना: आज का कार्य कल पर छोड़ना असफलता का सबसे बड़ा कारण है। टालमटोल से काम का बोझ बढ़ता है, तनाव उत्पन्न होता है और अवसर हाथ से निकल जाते हैं। इसलिए प्रत्येक कार्य को समय पर पूरा करने की आदत विकसित करनी चाहिए।

सफलता किसी एक दिन का परिणाम नहीं होती। यह निरंतर प्रयास, धैर्य और कठिन परिश्रम का फल है। नियमित अभ्यास और लगातार सीखने की इच्छा व्यक्ति को अपने लक्ष्य के निकट ले जाती है।

आत्मविश्वास: सफलता की शक्ति है। जो व्यक्ति अपनी क्षमता पर विश्वास करता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी समाधान खोज लेता है।आत्मविश्वास समय का बेहतर उपयोग करने की प्रेरणा देता है।

सकारात्मक सोच समय प्रबंधन के व्यवहारिक उपाय

समय का बेहतर उपयोग करने के लिए कुछ सरल उपाय अपनाए जा सकते हैं—

- प्रतिदिन की कार्य-योजना पहले से तैयार करें।
- महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता दें।समय-सीमा निर्धारित करके कार्य पूरा करें। अनावश्यक बातचीत और समय की बर्बादी से बचें। मोबाइल और सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करें।
- पर्याप्त विश्राम और नियमित व्यायाम करें। प्रतिदिन अपने कार्यों की समीक्षा करें और अगली योजना बनाएँ।
- नई जानकारी और कौशल सीखने के लिए प्रतिदिन कुछ समय अवश्य निकालें।

इन आदतों को नियमित रूप से अपनाने से समय का सदुपयोग संभव होता है और सफलता की राह आसान बनती है।

समय जीवन का सबसे मूल्यवान उपहार है। इसका सदुपयोग करने वाला व्यक्ति ही अपने सपनों को साकार कर सकता है। समय प्रबंधन केवल एक कौशल नहीं, बल्कि सफल जीवन जीने की कला है। स्पष्ट लक्ष्य, अनुशासन, नियमित परिश्रम, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और समय का उचित नियोजन सफलता के प्रमुख सूत्र हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति समय का सम्मान करे, अपनी प्राथमिकताओं को समझे और प्रत्येक क्षण का रचनात्मक उपयोग करे, तो वह निश्चित रूप से अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि समय को व्यर्थ नहीं गँवाएँगे, बल्कि उसका सर्वोत्तम उपयोग करके स्वयं, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। यही समय प्रबंधन का वास्तविक उद्देश्य और सफलता का सच्चा सूत्र है।

मेरी कहानी - मुश्किलों से मंजिल तक



प्राची टेकचंद पाटील
कार्यालय सहायक

बचपन से ही राहें आसान कहाँ थीं,
छोटी-सी उम्र में भी कुछ परेशानियाँ थीं।
जब बच्चे सपनों की दुनिया सजाते थे,
हम हालातों से लड़ना सीख जाते थे।

कभी ख्वाहिशें थीं, मगर साधन कम थे,
कभी अपने थे पास, मगर मौसम ग़म के थे।
हर ठोकर ने बस इतना समझाया,
गिरना कोई हार नहीं—फिर उठना ही है सिखाया।

फिर एक दिन मेहनत रंग लाई,
किस्मत ने भी मेरी दस्तक सुन पाई।
हाथ में नौकरी का ख़त आया,
आँखों ने पहली बार सुकून पाया।

पर मंज़िल भी कहाँ इतनी आसान थी,
नौकरी मिली, मगर जगह अनजान थी।
अपनों से दूर, एक नए शहर में आना पड़ा,
अपने सपनों के लिए घर छोड़ जाना पड़ा।

न चेहरे जाने-पहचाने, न कोई अपना था,
हर दिन खुद ही अपना सहारा था।
कभी अकेलापन, कभी जिम्मेदारियों का भार,
फिर भी दिल कहता रहा—
चल, अभी बाकी है तेरा सफ़र यार।

नई जगह पर खुद को साबित करना था,
हर मुश्किल के आगे मुस्कुराना था।
कभी बातों ने तो कभी हालातों ने परखा,
मगर मैंने हर बार खुद को थोड़ा और निखारा।

जो बचपन में कमी थी, उसने हिम्मत दी,
जो दूरी मिली, उसने पहचान दी।
जो दर्द मिला, उसने मजबूत बनाया,
और हर आँसू ने मुझे आगे बढ़ना सिखाया।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो लगता है,
वो हर मुश्किल शायद मेरी ज़रूरत थी।
अगर राह इतनी कठिन न होती,
तो शायद मंज़िल इतनी खूबसूरत न होती।

मैंने खोया भी बहुत, पाया भी बहुत,
कुछ अपनों को छोड़ा,
कुछ सपनों को जिया बहुत।
अब भी सफ़र खत्म नहीं हुआ है,
बस इतना यक़ीन है—
जिसने बचपन की मुश्किलों को पार किया है,
वो आने वाले हर तूफ़ान से भी लड़ सकता है।

कभी हालातों ने मुझे झुकाना चाहा,
कभी वक्त ने मुझे आज़माना चाहा,
पर मैंने हर बार खुद से यही कहा—
"मेरी कहानी अभी बाकी है,
मुझे अभी बहुत आगे जाना है।"



मेरी ऊटी यात्रा



प्रमोद कुमार द्विवेदी
पर्यवेक्षक (मा.सं.)

पिछले लगभग बीस वर्षो सें मैं जून के तीसरे सप्ताह में कहीं न कहीं घूमने की योजना बना ही लेता हूँ। इसकी एक वजह तो यह है कि इसी सप्ताह में मेरी वैवाहिक वर्षगाँठ पड़ती है और मेरी धर्मपत्नी को देशाटन से अत्यधिक लगाव है और स्कूलों की छुट्टियाँ भी इस दौरान रहती हैं। क्योंकि जून का महीना अत्यधिक गर्म होता है, अतः घूमने की जगह भी मौसम को ध्यान में रखते हुए "ठंडे क्षेत्रों" में निर्धारित करनी पड़ती है।

इसी क्रम में वर्ष-2025 की यात्रा तमिलनाडु राज्य में पड़ने वाले एक हिल स्टेशन "ऊटी" जाने की निर्धारित हो गई और ट्रेन की यात्रा का टिकट, होटल, घूमने के लिए टैक्सी तथा ऊटी की लोकल टाय-ट्रेन की बुकिंग भी अग्रिम रूप से कर ली गई। मेरी यात्रा, मेरी धर्मपत्नी व दो बच्चों (प्रांजल व प्रत्यक्ष) के साथ केरला एक्स्प्रेस ट्रेन से दिनांक 13 जून को प्रांरभ हुई और दिनांक 15 जून को कोयम्बतूर जंक्शन रेलवे स्टेशन में समाप्त हुई। इस लंबी यात्रा के दौरान दिन में पड़ने वाले लगभग ट्रेन के सभी ठहरावों पर प्रत्यक्ष द्वारा अपने यूट्यूब चैनल हेतु छोटी-छोटी वीडियो बनाई जाती थी। इसलिए मुझे भी सुरक्षा की दृष्टि से उसके साथ प्रत्येक स्टेशन पर उतरना पड़ता था। हालांकि इससे मेरा भी तन-मन तरो-ताजा हो जाता था। शेष समय नाश्ता-खाना, मोबाइल तथा किताबों के माध्यम से निकल जाता था। इस प्रकार ट्रेन की लंबी यात्रा कैसे पूरी हो गई, यह पता ही नही चला। 15 जून को लगभग दोपहर 1 बजे कोयम्बतूर जंक्शन रेलवे स्टेशन पर उतकर हमलोग पहले से ही बुक टैक्सी से 'कून्नूर' हिल स्टेशन, जो ऊटी से थोड़ा पहले व कम ऊंचाई पर स्थित है, के लिये चल पड़े। टैक्सी चालक को हिन्दी बिलकुल भी नहीं आती थी किन्तु अंग्रेजी वह हल्की-फुल्की बोल व समझ सकता था। अतः एक दूसरे की बाते समझने में दोनों पक्षों को कुछ मुश्किल तो हुई लेकिन इससे यात्रा में कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। इस सड़क यात्रा के दौरान कोयम्बतूर शहर की सुन्दरता, पहाड़ो की प्राकृतिक छटा तथा रास्ते में मिलने वाले मौसमी फलों विशेषकर जामुन खाकर तो मन अन्यन्त गदगद हो गया।

कुन्नूर का होटल, जोकि एक बड़े बंगले को होमेस्टे के रूप में परिवर्तित किया गया था, में पहुँचकर हम लोंगों ने एक-दो घंटे आराम किया और लगभग शाम के 9 बजे होमस्टे से बाहर निकल कर पैदल चलते-चलते तथा पैदल के रास्ते की बाईं ओर एक चाय-बागान को देखते हुए पास के मॉल में जा पहुँचे जहाँ पर हमें अपनी पसंद का शुद्ध-शाकाहारी भोजन भी मिल गया। रैस्टौरेंट प्योर वेज था अतः उसके रेट थोड़ा ज्यादा होने पर भी कष्ट नहीं हुआ और स्वादिष्ट व्यंजनों ने तो सभी की यात्रा की थकावट को पल भर में दूर कर दिया। रात को अपने कमरे में आकर हम सब अपने-अपने कमरों में आकार सो गए तथा रात भर भारी बारिश होती रही तथा रूम के बगल के मकान में रहने वाले परिवार में पति को देर-रात शराब का सेवन करके आने के बाद पति-पत्नी के बीच लड़ाई-झगड़े की आवाज़ भी देर तक सुनाई देती रही और इसके बाद कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। सुबह की नींद लगभग 8 बजे खुली जब होम स्टे की किचेन में काम करने वाली महिला ने दरवाजे पर नॉक किया और नास्ते के बारें में याद दिलाया।

सुबह बिस्तर से उठने के बाद, हम सभी झटपट तैयार हुए एवं नाश्ते के बाद टैक्सी में सीधे कुन्नूर घूमने निकल पड़े। कुन्नूर, ऊटी से थोड़ा कम ऊंचाई पर लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक बेहद खूबसूरत तथा शांत हिल स्टेशन है जो समुद्र तल से

लगभग 1800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह अपने हरे-भरे चाय बागानो, सुहाने मौसम व मन मोहक नज़ारो तथा सुंदरता के लिए जाना जाता है यहाँ पर "डॉल्फ़िन-नोज" जोकि एक व्यू पॉइंट है जहां से गहरी घाटियां और कैथरीन फ़ॉल्स (झरने) का शानदार नज़ारा बादलों की लुका-छुपी के बीच देखा जा सकता है। इसके अलावा, 'सिम्स पार्क' एक सुंदर व विशाल प्राकृतिक वनस्पति का उद्घाटन है जहां सैकड़ों किस्म के पेड़-पौधे और फूल देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़ियों व जंगलो का खूबसूरत पैनोरोमिक व्यू देती हुई 'लैम्ब्स रॉक' तथा कुछ झरने एवं एक 'फोर्ट' भी यहाँ का लोकप्रिय आकर्षण हैं। ड्राइवर ने ये सारे स्थान केवल घुमाए ही नहीं बल्कि उनके बारे में कार में यात्रा के दौरान विस्तृत जानकारी भी दी और यात्रा समाप्ति पर हमें एक "प्योर वेज रैस्टौरेंट" में खाना-खिलाने के उपरांत हमारे होमस्टे तक छोड़ दिया जहां पर हमने पुनः रात्रि विश्राम किया।

अगली सुबह उठकर हम सभी तैयार हुए एवं चाय-नाश्ता के उपरान्त होम स्टे से सुबह 9 बजे चेक-आउट कर कुन्नूर के टाय-ट्रेन स्टेशन से ऊटी स्टेशन तक पहुँचे तथा ऑटो से ऊटी में पहले से बुक किए हुए होटल पहुँच गायें। होटल शहर की मुख्य बाजार से लगभग तीन किलोमीटर दूर बेंगलूर जाने वाली रोड पर स्थित था। वहाँ पहुँचकर चेक-इन किया तथा कुछ आराम करने के बाद कार से ऊटी के स्थानीय दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए निकल पड़े तथा रात लगभग 8 बजे होटल वापस आए। पूरे दिन मौसम बहुत सुहावना रहा। बहुत हल्की-फुहार वाली बारिश दिन भर होती रही जो कि छतरी के सहारे और भी सुहानी हो गई। ऊटी तमिलनाडु राज्य में नीलगिरि पर्वतमाला जो पश्चिमी घाट का हिस्सा है और समुद्रतल से लगभग 2200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित खूबसूरत शहर है। इसे 'पहाड़ी स्टेशनों की रानी' के नाम से जाना जाता है। ऊटी को स्थानीय भाषा में 'उदगमंडलम' भी कहा जाता है। यहाँ के दर्शनीय स्थलों में ऊटी झील, बोटेनीकल गार्डन, कर्नाटक गार्डेन, रोज़ गार्डेन तथा नीलगिरी पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी 'डोडाबेट्टा पीक' शामिल हैं। यहाँ आप बोटिगं, वॉटर स्पोर्टस, फूलो के बागान, दुर्लभ पेड़-पोधे, विभिन्न क़िस्मों के गुलाब देखने का भरपूर आनंद ले सकते हैं।

यात्रा के अगले पड़ाव में आखिरी दिन हम लोग 'पैकरा' गए जो कि ऊटी से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है। यह हरे-भरे जंगलो एवं पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह क्षेत्र, टोडा जनजाति द्वारा अत्यंत पवित्र माना जाता है, जो पैकरा नदी के आस-पास के इलाके में रहते है। यह एक लोकप्रिय पर्यटन केंद्र है जो अपनी शांत झील, शानदार झरनो और बांध के लिए प्रसिद्ध है। पैकरा झील बांध के पानी से बनी हुई है जो बहुत विशाल है एवं यहाँ पर आप मोटर बोट की सवारी का आनंद ले सकते है। पैकरा वाटर फाल्स भी इसी नदी के पथरीले रास्ते से दो चरणों में 55 व 61 मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरता है जो अत्यधिक सुंदर व मनमोहक है। इन सभी स्थलों को देखने एवं बोटिंग का आनंद उठाने के बाद हम लोग शाम को 6 बजे तक वापस ऊटी पहुँच गए। ऊटी पहुँचकर वहाँ के मुख्य बाजार में घूमने के बाद भोजन किया एवं वापस होटल पहुँचे और रात गुजारी।

दूसरे दिन होटल से चेक-आउट करते हुए टाय ट्रेन द्वारा ऊटी से मेट्टुपलायम लगभग 5 घंटे की लगभग 46 किलोमीटर की यात्रा करने के उपरांत टैक्सी से कोयंबटूर पहुँच गए। टाय ट्रेन की यात्रा में प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते हुए, नीलगिरी पहाड़ियों को अलविदा कह दिया। मेट्टुपलायम का टाय ट्रेन स्टेशन बेंगलुरु रूट की रेलवे लाइन को जोड़ता है। किन्तु कोयम्बटूर के लिए सड़क यात्रा से ही जाया जा सकता है अतः हम लोग उबर टैक्सी से कोयम्बटूर रेलवे स्टेशन पहुँच गए एवं वहाँ से फिर केरला एक्सप्रेस ट्रेन से नई दिल्ली के लिए आ गए। इस तरह हमारी एक और सुखद यात्रा का यादगार समापन हो गया।







मेरी भाषा के लोग

मेरी भाषा के लोग
मेरी सड़क के लोग हैं
सड़क के लोग सारी दुनिया के लोग

पिछली रात मैंने एक सपना देखा
कि दुनिया के सारे लोग
एक बस में बैठे हैं
और हिन्दी बोल रहे हैं
फिर वह पीली-सी बस
हवा में गायब हो गई
और मेरे पास बच गई सिर्फ़ मेरी हिन्दी
जो अन्तिम सिक्के की तरह
हमेशा बच जाती है मेरे पास
हर मुश्किल में

कहती वह कुछ नहीं
पर बिना कहे भी जानती है मेरी जीभ
कि उसकी खाल पर चोटों के
कितने निशान हैं
कि आती नहीं नींद उसकी कई संज्ञाओं को
दुखते हैं अक्सर कई विशेषण
पर इन सबके बीच
असंख्य होठों पर
एक छोटी-सी खुशी से थरथराती रहती है यह !

तुम झाँक आओ सारे सरकारी कार्यालय
पूछ लो मेज़ से
दीवारों से पूछ लो
छान डालो फ़ाइलों के ऊँचे-ऊँचे
मनहूस पहाड़
कहीं मिलेगा ही नहीं
इसका एक भी अक्षर
और यह नहीं जानती इसके लिए
अगर ईश्वर को नहीं
तो फिर किसे धन्यवाद दे !

मेरा अनुरोध है —
भरे चौराहे पर करबद्ध अनुरोध —
कि राज नहीं — भाषा
भाषा — भाषा — सिर्फ़ भाषा रहने दो
मेरी भाषा को ।

इसमें भरा है
पास-पड़ोस और दूर-दराज़ की
इतनी आवाजों का बूँद-बूँद अर्क
कि मैं जब भी इसे बोलता हूँ
तो कहीं गहरे
अरबी तुर्की बांग्ला तेलुगु
यहाँ तक कि एक पत्ती के
हिलने की आवाज़ भी
सब बोलता हूँ ज़रा-ज़रा
जब बोलता हूँ हिंदी

पर जब भी बोलता हूं
यह लगता है —
पूरे व्याकरण में
एक कारक की बेचैनी हूँ
एक तद्भव का दुख
तत्सम के पड़ोस में ।

केदारनाथ सिंह

कृत्रिम मेधा: 21वीं सदी का वरदान या अभिशाप?



दीप्ति शर्मा
पर्यवेक्षक (मा.सं.)

21वीं सदी विज्ञान और तकनीक की सदी है, और इस दौर का सबसे क्रांतिकारी आविष्कार 'कृत्रिम मेधा' (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - AI) है। कंप्यूटर विज्ञान की यह शाखा मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, सीखने, तर्क करने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। आज स्मार्टफोन के वॉयस असिस्टेंट से लेकरअस्पतालों के आधुनिक उपकरणों तक, AI हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। विज्ञान के हर बड़ेआविष्कार की तरह इसके भी दो पहलू हैं—यह मानव सभ्यता के लिए एक अद्भुत वरदान भी है और एक छिपा हुआ अभिशाप भी।

वरदान के रूप में कृत्रिम मेधा

चिकित्सा, शिक्षा, विज्ञान और उद्योगों में एआई (AI) ने अभूतपूर्व प्रगति की है:

चिकित्सा क्षेत्र में जीवनरक्षक: एआई (AI) एल्गोरिदम एक्स-रे, एमआरआई और सीटी स्कैन का विश्लेषण डॉक्टरों से भी तेजी और सटीकता से कर सकते हैं। यह कैंसर और ट्यूमर जैसी घातक बीमारियों का शुरुआती चरण में ही पता लगाने में सक्षम है, जिससे लाखों लोगों की जान बचाई जा रही है।

सटीकता और उत्पादकता में वृद्धि: मानव स्वभाव के विपरीत, मशीनें कभी थकती नहीं हैं। एआई (AI) जटिल गणनाओं और डेटा विश्लेषण को बिना किसी त्रुटि (Human Error) के सेकंडों में पूरा कर देता है, जिससे उद्योगों की उत्पादकता कई गुना बढ़ गई है।

शिक्षा का वैश्वीकरण: एआई (AI) आधारित टूल्स छात्रों की व्यक्तिगत सीखने की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करते हैं। दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले बच्चे भी अब बेहतरीन शिक्षा प्राप्त कर पा रहे हैं।

जोखिम भरे कार्यों में सुरक्षा: गहरे समुद्र की खोज, अंतरिक्ष मिशन, परमाणु रिएक्टरों की देखरेख और कोयला खदानों जैसे खतरनाक स्थानों पर इंसानों की जगह एआई (AI) संचालित रोबोट का उपयोग किया जा रहा है, जिससे मानवीय जान का जोखिम कम हुआ है।

अभिशाप के रूप में कृत्रिम मेधा

जहाँ एक तरफ इसके अनगिनत फायदे हैं, वहीं इसके नकारात्मक पक्ष को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता:

बेरोजगारी का बढ़ता संकट: कारखानों में रोबोटिक्स, आईटी सेक्टर में ऑटोमेटेड कोडिंग और ग्राहक सेवा में चैटबॉट्स के आने से लाखों लोगों की नौकरियां छिन रही हैं। यह भविष्य में एक बड़े आर्थिक और सामाजिक संकट को जन्म दे सकता है।

निजता और साइबर सुरक्षा का खतरा: एआई(AI) को ठीक से काम करने के लिए भारी मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है। व्यक्तिगत जानकारी का यह संकलन डेटा लीक, हैकिंग और साइबर अपराधों के खतरे को बढ़ाता है।

डीपफेक और नैतिक संकट: आजकल एआई (AI) की मदद से किसी भी व्यक्ति के चेहरे और आवाज का हुबहू नकली वीडियो (डीपफेक) बनाया जा सकता है। इसका उपयोग राजनीतिक दुष्प्रचार, वित्तीय धोखाधड़ी और सामाजिक अशांति फैलाने के लिए धड़ल्ले से हो रहा है।

मानवीय आलस्य और विवेक की कमी: हर छोटे काम के लिए एआई (AI) पर निर्भरता इंसानी दिमाग को सुस्त बना रही है। मशीनों में भावनाएं, करुणा और नैतिक समझ नहीं होती, इसलिए वे कभी भी मानवीय विवेक का स्थान नहीं ले सकती।

कृत्रिम मेधा मानव बुद्धि का ही एक उत्कृष्ट सृजन है। यह तकनीक अपने आप में न तो वरदान है और न ही अभिशाप, यह पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग किस प्रकार करते हैं। यदि हम कड़े नियमों, नैतिक सीमाओं और सही नियंत्रण के साथ इसका उपयोग करेंगे, तो यह मानव कल्याण का माध्यम बनेगी। इसके विपरीत, अंधाधुंध और अनियंत्रित उपयोग विनाशकारी साबित हो सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक के दास न बनें, बल्कि इसे अपना सहायक बनाकर मानवता को आगे बढ़ाएं।

जीवन



रामानंद कुमार
पर्यवेक्षक (बुलियन)

मैं जीवन हूँ, अपने आप में अपने आप को ढूँढता हूँ।।
मैं जीवन हूँ, अपने होने के एहसास को ढूँढता हूँ।
इस कालचक्र में फँसे अपने आप को तरसता हूँ।।
मैं जीवन हूँ, मौत भी तो आधी है, बताओ आखिर अपनाऊँ कैसे।
अपने आप से रोज सफर करता हूँ, अपने आप को ढूँढने के लिए।।
मैं जीवन हूँ, बच्चों की खुशी में हैं, बूढ़ों की बेबस हँसी में हूँ।
बेवा की आँखों में हूँ, सारे जहाँ में अपने आप को पाता हूँ।।
मैं जीवन हैं, मौत की दहलीज पे जाता हूँ,
ना जाने किस तलक दूर से आता हूँ।
कभी छणिक खुशी में अपने आप को देखकर मुस्काता हूँ,
कभी दुख के सागर में डुबकी लगा के आँसू बहाता हूँ।।
मैं जीवन हूँ, अनमोल हूँ लेकिन किसी के साथ
अनन्त तक होने का एहसास नहीं कराता हूँ।
राजा के अन्दर इठलाता हूँ,
गरीब के अन्दर झल्लाता हूँ,
मगर किसी से बैर नहीं निभाता हूँ।।
मैं जीवन हूँ, अति न्यारा हूँ सबको ,
लेकिन कोई नहीं प्यार मुझको।
खुद जीवन हूँ लेकिन जाते-जाते सबको ,
मौत की सजा सुनाता हूँ।।
मैं जीवन हूँ,
अपने आप में अपने आप को ढूँढता हूँ।।

भारत सरकार टकसाल के कर्मयोगियों की कहानी



आकाश कुमार तोमर
कनिष्ठ कार्यालय सहायक

परम पूज्य पिताजी स्व. श्री विनोद कुमार को सप्रेम समर्पित।

"हम सिर्फ धातु को आकार नहीं देते, हम इस देश की साख और व्यापार को रफ्तार देते हैं। गर्व है हमें कि हम भारत सरकार टकसाल का हिस्सा हैं, जो हर भारतीय की जेब में देश का गौरव भरते हैं।"

जब एक आम नागरिक अपनी जेब से सिक्का निकालकर किसी दुकानदार को देता है, तो वह केवल एक लेन-देन कर रहा होता है। लेकिन भारत सरकार टकसाल के परिसर में काम करने वाले हम कर्मचारियों के लिए, वह सिक्का सिर्फ धातु का एक टुकड़ा नहीं है। वह हमारी दिन-रातों की मेहनत, फर्नेस की तपन, इंजीनियरिंग की सटीकता और देश के प्रति हमारी निष्ठा का प्रतीक है। आइए इस स्लोगन के गहरे अर्थ को समझें और जानें कि हम देश के लिए क्या मायने रखते हैं:

हम सिर्फ धातु को आकार नहीं देते: हमारा काम सिर्फ मशीनों को चलाना और पिघली हुई धातु को गोल सिक्कों में ढालना नहीं है। हमारा काम एक कला है। डिजाइनिंग से लेकर ब्लैंक कटिंग और कॉइनिंग प्रेस तक, हर चरण में जो बारीकियाँ हम बनाए रखते हैं, वह देश की संप्रभुता (Sovereignty) से जुड़ी हैं। हम हर सिक्के में भारत सरकार के भरोसे की मुहर लगाते हैं।

हम इस देश की साख और व्यापार को रफ्तार देते हैं: किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती उसकी करेंसी से मापी जाती है। भले ही आज का दौर डिजिटल पेमेंट्स का हो, लेकिन देश के जमीनी व्यापार को सुचारू रूप से चलाने के लिए सिक्कों की उपलब्धता अनिवार्य है। हम देश के बाजार को वह 'रफ्तार' देते हैं जिससे छोटे से छोटा व्यापारी और बड़े से बड़ा उद्योगपति अपनी जीविका चलाता है। हमारी बनाई मुद्रा देश की आर्थिक साख की नींव है।

गर्व है हमें कि हम इंडिया गवर्नमेंट मिंट का हिस्सा हैं: मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद और नोएडा की टकसालों का इतिहास भारत के विकास का इतिहास है। अंग्रेजों के जमाने के मैन्युअल काम से लेकर आज के अत्याधुनिक ऑटोमेशन और हाई-स्पीड प्रेस तक, टकसाल ने खुद को समय के साथ बदला है। इस ऐतिहासिक और रणनीतिक संस्थान का हिस्सा होना किसी भी कर्मचारी के लिए देश सेवा के सीधे अवसर जैसा है। हम सीमा पर खड़े सैनिक तो नहीं हैं, लेकिन हम देश की आर्थिक सीमाओं के रक्षक जरूर हैं।

प्रश्नपत्र से परिणाम तक परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता की आवश्यकता



वैष्णवी सोनकर
उप प्रबंधक (विधि)

आज के समय में परीक्षा केवल ज्ञान और योग्यता मापने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह लाखों युवाओं के भविष्य, आकांक्षाओं और जीवन की दिशा निर्धारित करने वाली महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। विशेषकर प्रतियोगी एवं भर्ती परीक्षाओं में एक अंक भी किसी अभ्यर्थी के चयन और असफलता के बीच अंतर पैदा कर सकता है। ऐसे में परीक्षा की निष्पक्षता और विश्वसनीयता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

समय-समय पर विभिन्न देशों में प्रश्नपत्र की गोपनीयता भंग होने, अनुचित साधनों के प्रयोग, परीक्षा केंद्रों में अनियमितताओं, पहचान संबंधी धोखाधड़ी तथा परिणामों को लेकर उठे प्रश्नों ने परीक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता को चुनौती दी है। भारत में भी प्रश्नपत्रों की गोपनीयता और सार्वजनिक परीक्षाओं की शुचिता को लेकर गंभीर चर्चा हुई है। इसी क्रम में सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों की रोकथाम के लिए विधिक प्रावधानों को भी सुदृढ़ किया गया है।

परंतु प्रश्नपत्र की सुरक्षा केवल परीक्षा व्यवस्था का एक पक्ष है। वास्तविक चुनौती प्रश्नपत्र तैयार होने से लेकर परिणाम घोषित होने तक पूरी प्रक्रिया को सुरक्षित, पारदर्शी और उत्तरदायी बनाना है।

परीक्षा की शुचिता क्यों आवश्यक है?

एक निष्पक्ष परीक्षा उस अभ्यर्थी के परिश्रम को उचित मूल्य देती है जिसने वर्षों तक तैयारी की है। यदि किसी अभ्यर्थी को अनुचित माध्यम से प्रश्नपत्र अथवा उत्तर प्राप्त हो जाएँ, तो वह ईमानदारी से परीक्षा देने वाले अन्य अभ्यर्थियों की तुलना में अनुचित लाभ की स्थिति में आ जाता है। इसलिए परीक्षा की शुचिता केवल प्रशासनिक विषय नहीं, बल्क समान अवसर, निष्पक्षता और सामाजिक विश्वास से जुड़ा विषय है। परीक्षा में किसी प्रकार की अनियमितता का प्रभाव केवल कुछ अभ्यर्थियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी चयन प्रक्रिया की विश्वसनीयता प्रभावित होती है।

प्रश्नपत्र की गोपनीयता : पहली सुरक्षा दीवार

प्रश्नपत्र तैयार करने, संपादित करने, मुद्रित करने, सुरक्षित रखने और परीक्षा केंद्र तक पहुँचाने की प्रत्येक अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है। आधुनिक समय में केवल भौतिक सुरक्षा पर्याप्त नहीं है। सुरक्षित अभिलेखन, सीमित पहुँच, कूटबद्ध डिजिटल व्यवस्था, निगरानी प्रणाली, अभिगमन का अभिलेख तथा सुरक्षित परिवहन जैसी व्यवस्थाएँ भी आवश्यक हैं।

इसके साथ ही प्रत्येक चरण में उत्तरदायित्व स्पष्ट होना चाहिए। यह निर्धारित होना चाहिए कि संवेदनशील सामग्री तक किस अधिकारी की पहुँच है और किसी अनियमितता की स्थिति में उसकी जाँच किस प्रकार की जाएगी।

इस प्रकार परीक्षा की सुरक्षा का दृष्टिकोण केवल "प्रश्नपत्र को सुरक्षित रखने" तक सीमित न होकर पूरी परीक्षा-श्रृंखला की सुरक्षा पर आधारित होना चाहिए।

डिजिटल युग की नई चुनौतियाँ

तकनीक ने परीक्षा व्यवस्था को अधिक सुविधाजनक और पारदर्शी बनाया है। संगणक आधारित परीक्षाएँ, जैविक पहचान, सीसीटीवी निगरानी, डिजिटल उपस्थिति तथा स्वचालित मूल्यांकन जैसी व्यवस्थाओं ने अनेक मानवीय त्रुटियों को कम किया है।

लेकिन तकनीक के साथ नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। साइबर अपराध, डिजिटल सामग्री की अनधिकृत पहुँच, पहचान की चोरी, सामाजिक माध्यमों पर अफवाहें और फर्जी प्रश्नपत्र जैसी समस्याएँ परीक्षा व्यवस्था को प्रभावित कर सकती हैं। अतः आधुनिक परीक्षा प्रणाली में तकनीकी सुरक्षा के साथ-साथ साइबर सुरक्षा और त्वरित सूचना व्यवस्था भी आवश्यक है। अभ्यर्थियों को यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होना चाहिए कि परीक्षा से संबंधित प्रमाणिक सूचना किस माध्यम से प्राप्त की जा सकती है, ताकि वे भ्रामक सूचनाओं का शिकार न हों।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : अवसर भी, चुनौती भी

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता परीक्षा व्यवस्था के लिए एक नई चुनौती बनकर उभरी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण निबंध लिखने, प्रश्नों के उत्तर देने, समस्याओं को हल करने और विभिन्न प्रकार की सामग्री तैयार करने में सक्षम हैं। इससे विशेषकर घर से होने वाले कार्य, परियोजनाओं और अन्य मूल्यांकन पद्धतियों की विश्वसनीयता पर नए प्रश्न उठे हैं। यूनेस्को ने भी माना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने पारंपरिक मूल्यांकन पद्धतियों को चुनौती दी है और अब केवल स्मरण शक्ति के बजाय आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, समस्या-समाधान और नैतिक विवेक जैसे मानवीय कौशलों के मूल्यांकन पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसलिए भविष्य की परीक्षा व्यवस्था में यह स्पष्ट होना आवश्यक है कि कहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग अनुमत है और कहाँ प्रतिबंधित। साथ ही, केवल तकनीकी पहचान प्रणालियों पर निर्भर रहने के बजाय मानवीय निगरानी और उचित प्रक्रिया को भी महत्व दिया जाना चाहिए।

मूल्यांकन और परिणाम में विश्वास

परीक्षा का अंतिम चरण परिणाम है, लेकिन परिणाम की विश्वसनीयता उसके पीछे की मूल्यांकन प्रक्रिया पर निर्भर करती है। उत्तरों का सुरक्षित संधारण, मूल्यांकन में शुद्धता, तकनीकी अभिलेखों का संरक्षण और आवश्यकतानुसार पुनः जाँच या आपत्ति की व्यवस्था अभ्यर्थियों के विश्वास को मजबूत करती है। यदि किसी परीक्षा में तकनीकी त्रुटि या प्रशासनिक चूक हो जाए, तो संस्था का दायित्व है कि वह समस्या की पहचान करे, उसके प्रभाव का निष्पक्ष आकलन करे और प्रभावित अभ्यर्थियों के हित में उचित निर्णय ले। त्रुटि को छिपाने के बजाय समय पर स्वीकार कर उसका समाधान करना ही उत्तरदायी प्रशासन की पहचान है।

विधिक दृष्टिकोण से परीक्षा की निष्पक्षता

परीक्षा व्यवस्था में कुछ मूलभूत विधिक सिद्धांतों का विशेष महत्व है— सभी अभ्यर्थियों को समान अवसर प्राप्त हो, परीक्षा प्रक्रिया निष्पक्ष और भेदभाव रहित हो, नियम एवं शर्तें पूर्व से स्पष्ट हों, अनियमितता के मामलों में उचित प्रक्रिया अपनाई जाए, अभ्यर्थियों की आपत्तियों एवं शिकायतों के लिए प्रभावी व्यवस्था हो, प्रत्येक महत्वपूर्ण निर्णय का उचित अभिलेखीकरण किया जाए, तकनीकी अथवा प्रशासनिक त्रुटि की स्थिति में प्रभावित अभ्यर्थियों के हितों का ध्यान रखा जाए। इस प्रकार पारदर्शिता केवल सूचना उपलब्ध कराने का विषय नहीं, बल्कि निष्पक्ष निर्णय लेने की प्रक्रिया भी है।

भविष्य की परीक्षा व्यवस्था

विश्वसनीय परीक्षा प्रणाली के लिए तकनीक और मानवीय उत्तरदायित्व का संतुलन आवश्यक है। प्रश्नपत्र की सुरक्षित व्यवस्था, सीमित पहुँच, डिजिटल निगरानी, जैविक पहचान, सीसीटीवी, प्रशिक्षित परीक्षा कर्मी, सुरक्षित मूल्यांकन, स्पष्ट शिकायत निवारण तथा समयबद्ध सूचना—इन सभी को एक समग्र व्यवस्था के रूप में विकसित करना होगा। साथ ही, परीक्षा संस्थाओं को समय-समय पर अपनी सुरक्षा व्यवस्था का परीक्षण और स्वतंत्र समीक्षा भी करनी चाहिए। केवल घटना होने के बाद सुधार करने के बजाय जोखिम की पहले पहचान और उसकी रोकथाम पर ध्यान देना अधिक प्रभावी होगा। आज जब दुनिया डिजिटल परिवर्तन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नए युग में प्रवेश कर रही है, तब परीक्षा व्यवस्था को भी नई चुनौतियों के अनुरूप विकसित करना होगा। तकनीक का उपयोग सुरक्षा और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए, किंतु अंतिम आधार मानवीय विवेक, नैतिकता, उत्तरदायित्व और विधिक निष्पक्षता ही रहना चाहिए। अंततः यह कहा जा सकता है कि— "प्रश्नपत्र की सुरक्षा से लेकर परिणाम की विश्वसनीयता तक, परीक्षा का प्रत्येक चरण अभ्यर्थी के विश्वास की परीक्षा है।" एक ऐसी परीक्षा व्यवस्था, जिसमें प्रतिभा को उचित अवसर मिले, परिश्रम का सम्मान हो और प्रत्येक अभ्यर्थी को निष्पक्षता का विश्वास हो—वही वास्तव में सशक्त, पारदर्शी और सुशासित व्यवस्था की पहचान है।

संकल्प का नया सवेरा



लालता कुशवाह
वरिष्ठ तकनीशियन

चुनौतियों के चक्रव्यूह से, राह अपनी निकालना सीख।
परिस्थितियों के सम्मुख झुककर, मत माँग तू रहम की भीख।
वही जीतते हैं जग में, जो तूफानों से टकराते हैं,
कमज़ोर बहाने गढ़ते हैं, साहसी इतिहास बनाते हैं।
जितनी तीखी धूप होगी संघर्ष की इस राह पर,
सफलता की छाँव उतनी ही शीतल होगी हर चाह पर।
काँटों की चुभन ही सिखाती है, सँभलकर कदम बढ़ाना,
अँधेरी रातों को चीरकर ही सीखता है सूरज जगमगाना।
भाग्य के भरोसे बैठना, कायरता की निशानी है,
तेरी भुजाओं का बल ही, तेरी असली कहानी है।
दोष मत दे तू समय को, न ही रेखाओं का रोना रो,
पुरुषार्थ की इस पावन माटी में, तू मेहनत के बीज बो।
पसीने की हर एक बूँद से, तू अपनी तकदीर सजा दे,
निशब्द खड़ी इन मुश्किलों को, अपनी हिम्मत से हिला दे।
कलम उठा अपने कर्मों की, और नया अध्याय लिख दो,
परिस्थितियों को दोष मत दो, अपनी मेहनत से इतिहास लिख दो।

संदेश:

"यह कविता उन सभी संघर्षशील दिलों को समर्पित है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानते। जीवन में मुश्किलें हमें तोड़ने नहीं, बल्कि हमारे भीतर के असली साहस को जगाने आती हैं। याद रखें, आपकी आज की मेहनत ही आपके कल का गौरवशाली इतिहास बनेगी।"

गांधीजी का पत्रकार रूप



हीरा मणि सुयाल
उप प्रबन्धक (राभा)

अक्सर हम लोग महात्मा गांधी को बापू, राष्ट्रपिता, महात्मा, समाजसुधारक आदि नामों से जानते हैं पर बहुत कम लोग "पत्रकार गांधी" (जर्नलिस्ट गांधी) के नाम से परिचित होंगे। गांधी जी 19 वर्ष की आयु से ही लेखन में रुचि रखने लगे थे। उन्होने लंदन में वेजिटेरियन सोसाइटी ऑफ इंग्लैंड की पत्रिका "वेजिटेरियन" के लिए शुरुआती आलेख लिखे। दक्षिण अफ्रीका की राजनैतिक स्थिति ने उन्हें सत्याग्रही के साथ-साथ एक परिपक्व पत्रकार भी बना दिया। दक्षिण अफ्रीका जाने पर उन्होने लंदन में प्रकाशित होने वाले दादा भाई नौरोजी के अखबार "इंडियन" के लिए "दक्षिण अफ्रीकन संवाददाता"के रूप में भी कार्य किया। इसके अलावा, द्वितीय बोअर युद्ध के समय उन्होंने "द टाइम्स ऑफ इंडिया" अखबार के लिए रिपोर्टें लिखीं। इस दौरान उन्होंने भारतीय एम्बुलेंस के स्वयंसेवकों के साथ युद्ध क्षेत्र में काम किया और युद्ध का अनुभव लिया। उन्होंने युद्ध से अपने अनुभवों को टाइम्स ऑफ इंडिया को भेजना शुरू किया जिसके लिए उन्हें "वार कॉरेसपांडेन्ट" (युद्ध संवाददाता) कहा गया। यहीं से वस्तुतः महात्मा गांधी की पहचान या उनके संघर्षों की शुरुआत पत्रकार रूप में हुई थी।

दक्षिण अफ्रीका में उन्होने नस्ली भेदभाव के विरुद्ध अपना संघर्ष वर्ष 1903 में "इंडियन ओपिनियन" नामक समाचारपत्र के प्रकाशन साथ शुरू किया जो भारतीय वर्ग में नस्ली भेदभाव के विरुद्ध विचारों के आदान-प्रदान तथा मानव अधिकारों का प्रचार और हिमायत करने में मददगार साबित हुआ। "इंडियन ओपिनियन" का प्रथम संपादकीय "हम स्वयं" (अवरसेल्वस) के नाम से प्रकाशित किया गया। यह अखबार अँग्रेजी, गुजराती, हिन्दी एवं तमिल में प्रकाशित किया जाता था। भारत में उन्होने नवजीवन, हरिजन, यंग इंडिया आदि पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित कराई।

महात्मा गांधी समाज सेवा को ही पत्रकारिता का मुख्यउद्देश्य मानते थे। वे प्रेस और फोटोग्राफरों की स्वतन्त्रता को सर्वोच्च स्थान देने के साथ-साथ अन्य की समानता में विश्वास रखते थे।

गांधीजी न केवल पत्रिका के लिए लिखते थे, बल्कि इसके खर्चों को पूरा करने के लिए अपनी मेहनत की कमाई भी देते थे। उन दिनों इंडियन ओपिनियन के सामने आई कठिनाइयों का वर्णन गांधीजी के निकट सहयोगियों में से एक मिस्टर हेनरी पोलाक ने किया है। मिस्टर पोलाक ने लिखा, "प्रिंटिंग प्रेस, जहाँ टाइप की सेटिंग हाथ से की जाती थी, एक तेल इंजन द्वारा चलती थी जो बार-बार खराब हो जाती थी। जब ऐसा होता था, तो सेटलर को समय पर मेल प्रेषित करने हेतु पेपर बाहर निकालने के लिए हाथ का सहारा लेना पड़ता था। मिस्टर पोलाक ने कहा कि "जब ऐसा होता था, तो गांधीजी सचमुच दूसरों की तरह पूरी ऊर्जा के साथ काम में जुट जाते थे। कोई नौकर, चपरासी या अन्य श्रमिक नहीं थे। प्रेस कर्मचारियों को खुद ही कागज छापना, उसे मोड़ना, पते चिपकाना, बंडल बनाना और उन्हें रेलवे स्टेशन ले जाना पड़ता था।"

गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया-"मेरा मानना है कि एक संघर्ष जो मुख्यतः आंतरिक शक्ति पर निर्भर करता है, समाचार पत्र के बिना पूरी तरह से नहीं चलाया जा सकता - मेरा यह भी अनुभव है कि हम स्थानीय भारतीय समुदाय को शिक्षित नहीं कर सकते थे, और न ही दुनिया भर के भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका की घटनाओं से किसी अन्य तरीके से उतनी आसानी और सफलता के साथ अवगत रख सकते थे जितनी आसानी और सफलता के साथ "इंडियन ओपिनियन" के माध्यम से, जो निश्चित रूप से हमारे संघर्ष में एक सबसे उपयोगी और शक्तिशाली हथियार था।"

दक्षिण अफ्रीका छोड़ते समय गांधीजी ने इंडियन ओपिनियन को मिस्टर पोलाक के अधीन छोड़ दिया। 1916 में, उन्होंने अपने 23 वर्षीय दूसरे पुत्र, मणिलाल गांधी को "इंडियन ओपिनियन" के गुजराती और अंग्रेजी संस्करण का कार्यभार संभालने के लिए भेजा। समय-समय पर, उन्होंने श्री मणिलाल को पत्र लिखकर अखबारों के बारे में मार्गदर्शन दिया। एक पत्रकार-पुत्र के पत्रकार-पिता ने लिखा, "संपादक को धैर्य रखना चाहिए और केवल सत्य की खोज करनी चाहिए। आपको "इंडियन ओपिनियन" में वही लिखना चाहिए जो सत्य है; लेकिन अशिष्ट न हों और क्रोध न करें तथा अपनी भाषा पर संयम रखें। यदि आप ऐसा करते हैं तो इसे स्वीकार करने में संकोच न करें।"

"इंडियन ओपिनियन" का गुजराती संस्करण 7 अक्टूबर, 1919 को प्रकाशित हुआ। गांधीजी ने इसका कार्यभार संभाला। एक दिन बाद "यंग इंडिया" का भी प्रकाशन शुरू हुआ। गांधीजी दोनों के संपादक थे। उनकी सबसे लोकप्रिय पत्रिका, "द हरिजन", जो हरिजनों या ईश्वर के सेवकों के हित के लिए समर्पित थी, 1 फरवरी, 1933 को प्रकाशित हुई। बाद में, "हरिजन" गाँवों के हित और ग्रामीण क्षेत्रों में रचनात्मक कार्यों के लिए समर्पित हो गई।

सन 1925 में यंग इंडिया में गांधी जी ने लिखा, "इसलिए, अपने विश्वास के प्रति सच्चे रहने के लिए, मैं क्रोध या द्वेष में नहीं लिख सकता। मैं आलस्य से नहीं लिख सकता। मैं केवल जुनून भड़काने के लिए नहीं लिख सकता। पाठक को इस बात का अंदाज़ा नहीं हो सकता कि मुझे हर हफ़्ते विषयों के चयन और अपनी शब्दावली में कितना संयम बरतना पड़ता है। यह मेरे लिए प्रशिक्षण है। यह मुझे खुद में झाँकने और अपनी कमज़ोरियों का पता लगाने में सक्षम बनाता है। अक्सर मेरा घमंड एक चतुर अभिव्यक्ति या मेरा गुस्सा एक कठोर विशेषण का आदेश देता है। यह एक कठिन परीक्षा है, लेकिन इन खरपतवारों को हटाने का एक अच्छा अभ्यास है।"

गांधीजी ने पाठकों को स्वच्छता, आत्म-अनुशासन और अच्छे नागरिक होने के बारे में शिक्षित करने का प्रयास किया। उन्होंने पाया कि राजनीति में प्रेस और जनमत कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

गांधीजी ने पत्रकारों को अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करने की सलाह दी। उन्होंने कहा "लोकतंत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए वास्तव में तथ्यों का ज्ञान नहीं, बल्कि सही शिक्षा की आवश्यकता है। पत्रकारिता का असली काम जनता के मन को शिक्षित करना है, न कि जनता के मन में अवांछित और अवांछित धारणाएँ भरना। इसलिए, एक पत्रकार को अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए कि क्या और कब रिपोर्ट करना है..."

गांधीजी ने कई लोगों को देश और जनता की सेवा में पत्रकारिता का पेशा अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने एक प्रार्थना भाषण में उन्होंने कहा: "प्रेस को चौथा स्तंभ कहा जाता था। यह निश्चित रूप से एक शक्ति थी, लेकिन इस शक्ति का दुरुपयोग करना अपराध था। वे स्वयं एक पत्रकार थे और वे साथी पत्रकारों से अपील करना चाहते थे कि वे अपनी ज़िम्मेदारी समझें और सत्य की रक्षा के अलावा किसी और विचार के बिना अपना काम करते रहें..."

गांधीजी सनसनीखेज लेखन और सांप्रदायिक तनाव पैदा करने वाले लेखन के खिलाफ थे। 28 मई, 1931 को यंग इंडिया में "विषैली पत्रकारिता" शीर्षक के अंतर्गत उन्होंने लिखा: "मेरे पास पत्रिकाओं के कुछ अंश हैं जिनमें कुछ वीभत्स बातें हैं। इनमें सांप्रदायिक उत्तेजना, घोर मिथ्या प्रस्तुतीकरण और राजनीतिक हिंसा को उकसाना शामिल है। सरकार के लिए मुक़दमे चलाना या दमनकारी अध्यादेश पारित करना बेशक आसान है। ये बहुत अस्थायी रूप से ही सही, लेकिन उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते, और किसी भी स्थिति में ये लेखकों को नहीं बदल पाते, जो अक्सर प्रेस के खुले मंच से वंचित होने पर गुप्त प्रचार का सहारा लेते हैं।" वे पत्रकारों के लिए आत्म-संयम और आत्म-अनुशासन में विश्वास करते थे। एक पत्रकार के रूप में उनकी शिक्षाएँ पत्रकारिता और संचार के क्षेत्र में आज के पेशेवरों के लिए वास्तव में एक सीख हो सकती हैं।

"हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय–हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।"

–महात्मा गांधी

बेटियां बेटियां:
ऐसी होती हैं बेटियां



नानक चंद
परिचर

जो होश संभालते ही जान लेती हैं,
अपने प्रति दुनिया का नजरिया।
या वो, भांपने लगती हैं पल-पल
लोगों की नजरों में छिपा तिरस्कार।
ऐसी होती हैं बेटियां।

जो गुम कर देती हैं,
अपना बचपन चूल्हे की आग और चौके की माप में,
और सिर पर बोझ ले लेती हैं
परिवार की पुश्तैनी फिक्रों का।
ऐसी होती हैं बेटियां।

जिनकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती हैं,
जिनकी चुप्पी होती हैं संस्कार उनका,
झुकी निगाहें और मुट्ठी में कुछ रेखायें,
बांधती जाती हैं सिर्फ स्वीकार की गाँठें।
ऐसी होती हैं बेटियां।

जो पौधे सी यहाँ से उखाड़कर वहाँ रोप दी जाती हैं।
दो घरों में उजाला कर भी खुद अंधेरी रह जाती हैं।
सांचे में ढलते-ढलते मोम की गुड़िया बन जाती हैं,
कर्तव्य की उंगली थामें काँटों की चुभन सह जाती हैं।
ऐसी होती हैं बेटियां।

लक्ष्मी होकर भी, लक्ष्मी बिन नहीं ब्याही जाती हैं।
बिना मोल-तोल रिश्तों में न बांधी जाती हैं,
न निबाही जाती हैं।
कभी रौशन होने से पहले ही बुझा दी जाती हैं,
कभी दहेज के नाम पर जला दी जाती हैं।
भय से आंतकित होने के बाद निर्भया कहलाती हैं।
ऐसी होती हैं बेटियां।

छोटे सुधार, बड़ा परिवर्तन



गोविंद कुमार
वरिष्ठ तकनीशियन

किसी भी संस्था की प्रगति हमेशा बड़े बदलावों से ही नहीं होती है। कई बार छोटे-छोटे सुधार मिलकर बड़े और स्थायी परिवर्तन की आधार बनते है। यही सोच किसी भी संगठन को निरतंर बेहतर बनाने की दिशा में आगे ले जाती है।

यह प्रबंधन के साथ-साथ संस्थान में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। संस्था में कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभव और कार्यक्षेत्र की समझ के आधार पर सुधार के सुझाव दे सकता है। वास्तव में जो व्यक्ति किसी कार्य को प्रतिदिन करता है। वह उस प्रक्रिया की कमियों और संभावनाओं को अच्छे तरह से समझ सकता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में निरंतर सुधार केवल एक विचार नहीं बल्कि आवश्यकता बन चुका है। हमें यह सोच विकसित करनी होगी कि "यह काम हमेशा से ऐसे ही होता आया है, इसे और बेहतर कैसे किया जा सकता है?"

छोटो सुधारों की संस्कृति कर्मचारियों में जिम्मेदारी, रचनात्मकता और सहभागिता की भावना पैदा करती है। इससे कार्य की गुणवत्ता बढ़ती है। समय और संसाधनों की बचत होती है तथा संस्थान की कार्यक्षमता मजबूत होती है।

अंतत: किसी भी संस्था की वास्तविक मजबूती केवल उसकी मशीनों, तकनीक या संसाधनों में नहीं, बल्कि अपने काम को हर दिन कल से बेहतर करने की सामूहिक सोच में होती है। क्योंकि बड़ा परिर्वतन अक्सर किसी बड़े निर्णय से नहीं, बल्कि एक छोटे से बेहतर विचार से शुरु होता है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत निम्नलिखित दस्तावेजों को द्वभाषी जारी किया जाना अनिवार्य है / Under section 3(3) of Official Language Act, 1963, following documents are required to be issued bilingual:

सामान्य आदेश / General Orders, संकल्प / Resolution, परिपत्र / Circulars, नियम / Rules, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन / Administrative or other reports, प्रेस विज्ञप्तियां / Press Release/Communique, संविदाएं / Contracts, करार / Agreements, अनुज्ञप्तियां / Licences, निविदा प्रपत्र / Tender Forms, अनुज्ञा पत्र / Permits, निविदा सूचनाएं / Tender Notices, अधिसूचनाएं / Notifications, संसद के पटल पर प्रस्तुत किए जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र / Reports and documents to be laid before the Parliament.

रजिस्ट्री का सबसे बड़ा भ्रम



अतुल कुमार
वरिष्ठ तकनीशियन

करोड़ों साल तक पृथ्वी को
इंसानों की जरूरत नहीं थी ।
फिर इंसान आया और मालिक बन बैठा !

जमीन की रजिस्ट्रियाँ कर लो !
सरहदें खीच दी, और कहने लगा- "यह मेरी है।"

हैरानी की बात है। हर कागज पर
इंसान के हस्ताक्षर हैं।
प्रकृति के एक भी नहीं ।

जिस मिट्टी पर तुम मालिकाना हक
जताते हो वही मिट्टी एक दिन
तुम्हें बिना अनुमति अपने भीतर दफना देगी

तुम पृथ्वी के मालिक नहीं हो ।
पृथ्वी तुम्हारी आखिरी मालिक है।

विदेशी मूल के हिंदी सेवी - डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन - (1851-1941)

डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन की शख्सियत और काम दोनों लाजवाब थे। वह उन कम गोरे ऑफिसरों में थे, जिन्होंने अंग्रेजों के शासनकाल में राज करने से ज्यादा अपनी प्रजा के हित में मेहनत और निष्ठा से काम करने पर जोर दिया। उन्हें इस बात का श्रेय है कि उन्होंने कई भाषाओं वाले इस मुल्क में भाषाओं का एक परिवार 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' जैसी ऐतिहासिक कृति के जरिए बनाया। कुल 21 जिल्दों में छपा यह सर्वे स्थाई महत्व का है। 7 जनवरी, 1851 को डब्लिन में जन्मे ग्रियर्सन का बचपन से ही भाषाओं के प्रति लगाव था। वह 1873 में इंडियन सिविल सर्विस के अफसर के तौर पर भारत आए। आम दफ्तरी के उलट ग्रियर्सन दफ्तर के बाद अपना बचा हुआ वक्त संस्कृत, प्राकृत, हिंदी और बांग्ला भाषाओं और साहित्य के अध्ययन में लगाते थे। जहां भी उनकी नियुक्ति होती थी, वहां की भाषा, बोली, साहित्य और लोक जीवन की ओर वह खिंचते चले जाते थे।

विदेशी होने के बावजूद उन्होंने एक बन रही भाषा 'खड़ी बोली हिंदी' को न सिर्फ सीखा, बल्कि उस सीख को उन्होंने हिंदी की पाठ्य-पुस्तकें तैयार कर हिंदी को ही लौटा भी दिया। उनके काम का दायरा इस तरह अकादमिक जरूर था, लेकिन एक नई भाषा में यह पहली और असरदार कोशिश थी, जिसने आगे की राह खोली। सरकार ने उनकी सेवाओं की याद में 'डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार' की स्थापना की है, जो केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा किसी गैरभारतीय को हिंदी के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है।

महत्वपूर्ण द्विभाषी वाक्यांश



आशीष शर्मा
कनि. हिन्दी अनुवादक

कड़ी कार्रवाई की जाएगी।
Will be dealt with severely.

ऊपरिनिर्दिष्ट वेतन के सन्दर्भ में।
Refer to above refixation of pay.

से स्पष्टीकरण देने का अनुरोध करें।
May be requested to clarify.

अब यह निर्णय लिया गया है कि।
It has since been decided that.

समुचित कार्रवाई की गई है।
Has been dealt with suitably.

जहां तक संबंध है।
As regard to.

काम हो जाने पर लौटा दिया जाए।
May be returned when done.

विचार क्षेत्र में।
Within zone of consideration.

इसका यह अर्थ लगाया जाएगा।
Shall be construed.

सेवाकालिन प्रशिक्षण।
In service training.

वित्तीय वर्ष में प्राप्त समझी गई आय।
Income deemed to be received in financial year.

हस्ताक्षरित, मुहरबंद और सुपुर्द किए।
Signed, sealed and submitted.

अपेक्षित फाइलें नीचे रखी हैं।
Requisite files are placed below.

मामले को तत्काल समझा जाए।
Matter may be treated as urgent.

आवश्यक समझा जाए।
Treated as urgent.

से परामर्श करके।
After consultation with.

अपेक्षित पेपर नीचे रखे हैं।
The required papers are placed below.

कृपया जाँच अधिकारी से चर्चा करें।
Kindly discuss with the Enquiry Officer.

स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Call for an explanation.

मामले का सार दिया गया है।
Brief resume of the case is given.

आरोप पत्र तैयार करना।
Draw a charge sheet.

जिस किसी से संबंधित हो।
To whomsoever it may concern.

कृपया आप इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लें।
We shall be glad if you will personally look into the matter.

जिम्मेदारी



प्रमोद कुमार
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (वि एवं ले)

बीता बचपन खुशियों में,
ना सोचा कल का क्या होगा ।
उम्मीद भरी उन आँखों में,
था सोचा सब अपना होगा॥

गुजरा समय और हुए बड़े,
दोराहों पर रह गए खड़े।
जैसा सोचा हुआ ना वैसा,
बस नाम के हो गए बड़े॥

एक तरफ़ थी खुशियाँ मेरी,
थे मेरे अनेकों शौक़।
दूजी ओर ना रही ज़िंदगी,
ज़िम्मेदारी थी हर मोड़॥

आज दूध खत्म, कल कम राशन,
फिर सुना दवाई पर भाषण।
कपड़े फिर हो गए पुराने,
आया जो कल का फ़ैशन॥

ना रही समय की वो बातें,
ना रहा सभी का अपनापन।
बस चंद जरूरी सिक्कों में,
सिमट गया मेरा गुलशन।

रह गई ज़िंदगी, फिरसे पुरानी,
सोचा की तुमको है सुनानी।
आ गए काल के और निकट,
कट जाएगा ये भी समय विकट॥

राजभाषा विकास : विभिन्न संस्थाओं का गठन

राजभाषा विभाग: राजभाषा संबंधी संवैधानिक और कानूनी व्यवस्थाओं का अनुपालन सुनिश्चित करने एवं संघ के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून, 1975 से राजभाषा विभाग की स्थापना की गई है। अपनी स्थापना के समय से ही यह विभाग संघ के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रयास करता आ रहा है।

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो: केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना मार्च 1971 में गृह मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में की गई थी। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों और सरकार के स्वामित्व में आने वाले विभिन्न उपक्रमों, निगमों, निकायों आदि के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य जैसे मैनुअलों, कोड, फार्मों आदि के हिन्दी अनुवाद का दायित्व सौंपा गया है। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने अब तक लगभग 24 लाख पृष्ठों से अधिक का अनुवाद और पुनरीक्षण का कार्य किया है। ब्यूरो का प्रति वर्ष लगभग 76 हजार पृष्ठों का अनुवाद करने का लक्ष्य रहता है। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो निशुल्क अनुवाद करता है। इसके अतिरिक्त यह कार्यालय त्रैमासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय: केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय संविधान के अनुच्छेद 351 की व्यवस्था के कार्यान्वयन हेतु हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास का दायित्व केन्द्रीय सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय (वर्तमान में मानव संसाधन मंत्रालय) को सौंपा गया था। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की मार्च 1960 में स्थापना की गई। इस संस्था को हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसके विकास के कार्य सौंपे गए हैं। पत्राचार द्वारा हिन्दी शिक्षण, हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विस्तार कार्यक्रम, अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों को पुरस्कृत करना आदि निदेशालय द्वारा किए जा रहे कुछ प्रमुख कार्य हैं। यह हिन्दी कोशों, द्विभाषी-त्रिभाषी कोशों व्युत्पत्ति कोशों आदि को भी तैयार करता आ रहा है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग: राजभाषा आयोग की सिफारिशों के अनुपालन में 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गई। आयोग को तत्समय प्रचलित विभिन्न शब्दावलियों में समन्वय स्थापित करते हुए सभी भारतीय भाषाओं में स्वीकार की जा सकने वाली अखिल भारतीय तकनीकी शब्दावली का निर्माण करना था। आयोग ने शब्दावली निर्माण के सामान्य सिद्धांत निर्धारित करके अब तक विभिन्न विषयों के लगभग साढ़े आठ लाख शब्दों का निर्माण/निर्धारण किया है। आयोग ने प्रशासन के अतिरिक्त आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, वनस्पति विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि विभिन्न विषयों में प्रयुक्त पारिभाषिक और तकनीकी शब्दों का बहुत बड़े स्तर पर निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त आयोग ने पाठ्य पुस्तकें तैयार कराने के लिए अपेक्षित आधारभूत शब्द भण्डार भी उपलब्ध कराया है।

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान: राष्ट्रपति के 27 अप्रैल, 1960 के आदेशों के अनुसार केन्द्रीय सरकार के सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य है। इसी प्रकार उन टाइपिस्टों और आशुलिपिकों को भी हिन्दी टाइपिंग और हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है जिन्हें हिन्दी आशुलिपि नहीं आती। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई थी। इसके अंतर्गत प्रति वर्ष काफी संख्या में कर्मचारियों को हिन्दी भाषा, हिन्दी आशुलिपि और हिन्दी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसकी स्थापना से 31 दिसम्बर 2014 तक 17,79,048 से अधिक सरकारी कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टाइपिंग एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया गया है।

तकनीकी कक्ष : राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए देवनागरी लिपि में कार्य करने की क्षमतायुक्त यांत्रिक/इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपलब्ध होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर राजभाषा विभाग के अंतर्गत तकनीकी कक्ष की स्थापना की गई है। देवनागरी में उपलब्ध यांत्रिक सुविधाओं का प्रचार-प्रसार, कंप्यूटर पर देवनागरी में कार्य विषयक गोष्ठियों / कंप्यूटर प्रदर्शनियों का आयोजन कंप्यूटरों पर हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना, हिन्दी शिक्षण से संबंधित सॉफ्टवेयरों का विकास, कंप्यूटरों पर आधारित अनुवाद परियोजना आदि तकनीकी कक्ष के मुख्य कार्य हैं।

-राजभाषा अनुभाग की प्रस्तुति

गतिविधियां

हिन्दी पखवाड़ा 2025

इकाई में दिनांक 14 से 29 सिंतबर 2025 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखवाड़ा के दौरान इकाई में राजभाषा के प्रोत्साहन हेतु कई प्रतियोगिता जैसे टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता तथा टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इकाई के कर्मचारियों ने आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेता प्रतिभागीयों को श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा के द्वारा समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 29.09.2025 को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।








श्रम कानूनों पर प्रशिक्षण

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 26.09.2025 को श्रम कानूनों के अनुपालन और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के श्रम सुविधा पोर्टल के बारे में कर्मचारियों को जागरूक करने हेतु एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री हरि ओम गौतम, क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केंद्रीय) ने कर्मचारियों को श्रम क़ानूनों तथा श्रम सुविधा पोर्टल पर विस्तृत जानकारी साझा करते हुए उनका मार्गदर्शन किया।





कवि संगोष्ठी का आयोजन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने हेतु रोचक गतिविधि के रूप में दिनांक 14.10.2025 को एक कवि संगोष्ठी का आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नवोदित कवियों को काव्य पाठ हेतु आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर इकाई की राजभाषा गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के नौवे अंक का विमोचन भी श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स. ट. नोएडा के द्वारा किया गया।







अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस के अवसर पर दिनांक 03 दिसंबर, 2025 को श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा की अध्यक्षता में इकाई में पदस्थ दिव्याङ्गजन की जागरूकता हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक ने दिव्याङ्ग जन के सशक्तीकरण एवं उनके अधिकारों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यह दिन दिव्यांगजनों के प्रति करुणा रखने, उनके आत्मसम्मान को बढ़ाने और उनके सामने आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए प्रेरित करता है।





गणतंत्र दिवस समारोह 2026

भारत सरकार टकसाल नोएडा में गणतंत्र दिवस-2026 के अवसर पर 26 जनवरी 2026 को गणतंत्र दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा द्वारा राष्ट्र ध्वज फहराया गया। आयोजन के दौरान सीआईएसएफ़ कर्मियों द्वारा परेड की गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। गणतन्त्र दिवस समारोह 2026 में इकाई के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सीआईएसएफ के कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।







राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार टकसाल, नोएडा को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंडी संजय कुमार और त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा की गरिमामयी उपस्थिति में दिनांक 20.02.2026 को अगरतला, त्रिपुरा में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में उत्तर-2 क्षेत्र में वर्ष 2024-25 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन करने के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इकाई की ओर से यह पुरस्कार श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा द्वारा तथा प्रमाणपत्र श्री हीरा मणि सुयाल, उप प्रबन्धक (राभा) द्वारा ग्रहण किया गया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस-2026 के अवसर पर दिनांक 08.03.2026 को भारत सरकार टकसाल, नोएडा में महिलाओं को समर्पित एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इकाई की सभी महिला अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं अन्य सहकर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा के करकमलों से POSH अधिनियम 2013 पर एक पत्रिका का विमोचन किया गया।







55वां राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह 2026

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 4 से 10 मार्च 2026 तक 55वां राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह आयोजित किया गया। 55वें संरक्षा सप्ताह का आयोजन "सुरक्षा को बढ़ाने के लिए लोगों को शामिल करना, शिक्षित करना और सशक्त बनाना" थीम के साथ किया गया। इस दौरान इकाई में संरक्षा को प्रोत्साहन देने हेतु कई प्रतियोगिताओं तथा मेडिकल कैंप का भी आयोजन किया गया।











संयुक्त राजभाषा कार्यशाला

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 25.06.2026 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) नोएडा के तत्वावधान में संयुक्त राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. ओमप्रकाश द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन और ई-टूल्स विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया। इस कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) नोएडा के सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने इस व्याख्यान का लाभ उठाया।







स्वतन्त्रता दिवस समारोह 2026

भारत सरकार टकसाल नोएडा में स्वतन्त्रता दिवस-2026 के अवसर पर 15 अगस्त 2026 को स्वतन्त्रता दिवस समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री दुर्गेश पति तिवारी, मुख्य महाप्रबंधक, भा.स.ट. नोएडा द्वारा ध्वजारोहण किया गया। आयोजन के दौरान सीआईएसएफ़ कर्मियों द्वारा परेड की गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। स्वतन्त्रता दिवस समारोह 2026 में इकाई के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सीआईएसएफ के कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।









छठा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिन्दी दिवस समारोह 2026

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नवी मुंबई में दिनांक 14.09.2026 को आयोजित छठे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हिंदी दिवस समारोह-2026 का उद्घाटन किया। उन्होंने समारोह के दौरान भारतीय भाषाओं को समर्पित देश के पहले डेटा सेंटर 'भाषा कुंज' का लोकार्पण किया। इस अवसर पर देश भर के हजारों विद्वान एवं हिन्दी सेवी उपस्थित हुए तथा माननीय गृह मंत्री जी द्वारा राजभाषा हिंदी के विद्वानों, लेखकों और हिंदी के लिए कार्य करने वाले लोगों को पुरस्कृत किया गया।









अक्षर

हम सब अक्षर हैं

अक्षर हरे काग़ज़ पर हों या सफ़ेद पर
खुरदरे में हों या चिकने में

टोपी पहने हों या नंगे सिर
अँग्रेज़ हों या हब्शी

उन्हें लिखने वाला क़लम पार्कर हो या नरसल
लिखने वाली उँगलियों में क्यूटैक्स लगा हो या मेहँदी

अक्षर, अक्षर ही है
शब्द वह नहीं है

अमर होते हुए भी अपने आपमें वह सूना है
अक्षर अर्थ वहन करने का एक प्रतीक है, माध्यम है

अक्षर-अक्षर का ढेर, टाइप-केस में भरा सीसा मात्र है
शब्द बनाता है—अक्षर-अक्षर का संबंध

वही देता है उसे गौरव, गरिमा और गाम्भीर्य
क्योंकि शब्द ब्रह्म है

हम सब अक्षर हैं
और सभी मिलकर एक सामाजिक सत्य को अभिव्यक्ति देते हैं

सत्य जड़ नहीं, चेतन है
सामाजिक सत्य एक गतिमान नदी है

वह अपनी बाढ़ में कभी हमें बहा देती है, बिखरा देती है
कभी नदी बह जाती है

तो घोंघे की तरह हम किनारों से लगे झूलते रहते हैं
इधर-उधर हाथ-पाँव मारते हैं

लेकिन फिर मिलते हैं
शब्द बनते हैं—वाक्य बनते हैं

और फिर नए सामाजिक सूत्र को वाणी देते हैं
क्योंकि मरते हम नहीं हैं

हम अक्षर जो हैं
शब्द बनकर सत्य को समोना हमारी सार्थकता है

वाक्य बनना हमारी सफलता
हमें पढ़ो, हमारा एक व्याकरण है।

राजेंद्र यादव